मानमंदिर बरसाना

मासिक पत्रिका-वर्ष ०९, अंक ०८, श्रीकृष्ण सं.५२५१, 'श्रावण-भाद्रपद' वि.सं. २०८२ (अगस्त २०२५ ई.)

मूल्य १०/-

गुरुपूर्णिमा पर्व पर श्रीमाताजी गौशाला में
आयोजित सहजो बाई नाटिका के दृश्य

अनुक्रमणिका

विषय- सूची | पृष्ठ- संख्या

१ श्रीकृष्णकृपा-प्राप्ति का सुगम उपाय 'राधा-आराधन'......०५
२ भारत माता का वैभव 'गौवंश'................................१०
३ श्रीसेवाराधिका 'प्रभुताजी'चरित्र...............................१४
४ श्रीसंत-संग का अमोघ प्रभाव....................................१८
५ श्रीगुरुतत्त्व...२२
६ श्रीब्रज की शोभा 'सावन'..२३
७ परमरसमय महापर्व 'श्रीहरियाली तीज'......................२६
८ श्रीभक्तमाल-सुमेरु गोस्वामी 'तुलसीदासजी-जयन्ती'......२७
९ परम दयामयी 'श्रीराधे किशोरीजू'............................२९
१० श्रीधाम बरसाना में 'श्री राम कथा महामहोत्सव'...........३२
११ राधे राधे । प्रिय वैष्णवजन - (श्री हरेश संघवीजी)..........३३

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषय-विष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्यो ।

INSTAAL करें --- PLAY STORE से-----

MAANINI APP

बाबाश्री के सत्संग/कीर्तन/भजन, साहित्य, आदि यहाँ से FREE - DOWNLOAD कर सकते हैं व सुन सकते हैं ।

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले ।"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें । हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है ।

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८.०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं ।

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें । हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है – **सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ । जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ।।** (श्रीमद्भागवत३/७/४१)
अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता ।

संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल , प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर , गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)**

mob. राधाकांत शास्त्री ....9927338666, Website :www.maanmandir.org , (E-mail :info@maanmandir.org)

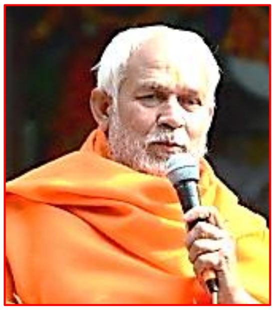

प्रकाशकीय

श्रीब्रजमण्डल में रस कहाँ से आया ? बरसाना से । बरसाना में रस कहाँ से आया ? बरसाना में रस आया, श्रीराधारानी के चरणकमलों से । ये सभी जानते हैं कि राधारानी का गाँव बरसाना है, जहाँ आने के लिए श्रीकृष्ण भी तरसा करते हैं । प्रायः लोग इस बात को नहीं समझ पाते हैं । जो सबसे प्रधान श्रीराधारानीजी का ग्रन्थ राधारससुधानिधि है, उसमें सबसे पहले इस 'श्रीबरसाना धाम' की ही वन्दना की गई है । **"यस्या: कदापि........वृषभानुभुवो दिशेऽपि ॥"** (श्रीराधासुधानिधि - १) रसिक लोग कहते हैं कि श्रीराधारानी को प्रणाम करने की योग्यता तो हममें नहीं है । उनके श्रीचरणों को अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड नायक भगवान् श्रीकृष्ण भी छूने में हिचकते हैं और बड़े भय से उनके चरणों को छूते हैं । जब वे श्रीजी के चरण छूने जाते हैं तो वह प्रेम से हुँकार करती हैं तो रसिक श्यामसुन्दर डर जाते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि लाड़लीजी मान कर लें; इसीलिए भयभीत होकर पीछे हट जाते हैं । उन चरणों से ही जो दिव्य प्रेमरस बिखरा, उस रस को पाकर के गोपीजन ही नहीं स्वयं श्रीकृष्ण भी धन्य हुए । ब्रजलीला में मुख्य वस्तु क्या है ? 'प्रेम' । ब्रह्म का सर्वसार ही 'प्रेम' है । श्रीकृष्ण राधारानी के चरण पकड़ते हैं यह एक गुप्त लीला है, इसे समझना कठिन है । एक बात जानना जरूरी है कि राधारानी कौन हैं ? संक्षिप्त में समझेंगे कि 'राध्' धातु के बहुत से अर्थ होते हैं । देवी भागवत में इसके बारे में लिखा है कि जिससे समस्त कामनायें, यहाँ तक कि कृष्ण को पाने की कामना भी सिद्ध हो जाती हैं । सामरहस्योपनिषद् में वर्णन आया है कि 'राधा' नाम क्यों पड़ा ? भगवान् सत्य संकल्प हैं, उनको युद्ध की इच्छा हुई तो उन्होंने जय-विजय को श्राप दिला दिया, तपस्या की इच्छा हुई तो नर-नारायण बन गये, उपदेश देने की इच्छा हुई तो भगवान् कपिल बन गये । उस सत्य संकल्प प्रभु के मन में अनेक इच्छाएँ उत्पन्न होती रहती हैं । इस बार भगवान् के मन में इच्छा हुई कि हम भी आराधना करें, भजन करें लेकिन किसका भजन करें ? उनसे बड़ा कौन है ? तो श्रुतियाँ कहती हैं कि स्वयं ही उन्होंने अपनी आराधना की । ऐसा क्यों किया ? क्योंकि वह अकेले ही तो हैं तो किसकी आराधना करेंगे । अतः श्रुतियाँ कहती हैं कि कृष्ण के मन में आराधना की इच्छा प्रगट हुई तो श्रीकृष्ण ही राधारानी के रूप में प्रकट हो गये । इसीलिए मान आदि लीला में श्रीकृष्ण राधारानी के चरण पकड़ते है तो ये विशेष प्रेम की लीला है । राधारानी तो उनका ही रूप हैं, उनकी ही आत्मा हैं । श्रीभगवान् कहते हैं – **निरपेक्षं मुनिं शान्तं ....पूयेयेत्यङ्घ्रिरेणुभिः ॥** (श्रीभागवतजी ११/१४/१६) तुम निरपेक्ष हो जाओ तो मैं तुम्हारे भी चरणों के पीछे घूमूँगा कि जिससे तुम्हारी चरणरज मेरे ऊपर पड़ जाय और मैं पवित्र हो जाऊँ । भगवान् तो रसिक हैं जो भक्तों के चरणों की रज के लिए उनके पीछे दौड़ते हैं । जब भगवान् भक्तों की चरणरज के लिये भक्तों के पीछे दौड़ते हैं तो राधारानी के चरण पकडें तो इसमें क्या आश्चर्य ? श्रीजी के चरणों की ये विशेषता है कि जो संसार में सबसे सुंदर चन्द्रमा है, वैसे एक नहीं, दो नहीं, हजार नहीं, लाख नहीं, करोड़ों चन्द्रमा श्रीजी के श्रीचरणों में जो नखमणि है, उनके ऊपर न्यौछावर कर दो । श्रीबिहारीजी इन चरणों को अपने हाथों में लेकर के दिन-रात सेवा करते हैं । सेवा करना अगर सीखना हो तो बिहारीजी से सीखो । जिस समय श्रीजी रास में नृत्य करती हैं तो श्रीबिहारीजी शिष्य बन जाते हैं और श्रीजी गुरु बन जाती हैं, शिष्य बनकर श्रीठाकुरजी 'श्रीराधिका' की सेवा करते हैं । स्वामी श्रीहरिदासजी ने लिखा है कि समस्त चतुराई श्रीकृष्ण ने श्रीराधारानी से ही सीखी है ।

श्रीराधाष्टमी की पूर्व रात्रि वेला में श्रीमानमन्दिर कला अकादमी द्वारा नाट्य-प्रस्तुति होगी ।

कार्यकारी अध्यक्ष

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

श्रीकृष्णकृपा-प्राप्ति का सुगम उपाय 'राधा-आराधन'

भावाभिव्यक्ति –

अध्यक्ष – डॉ. श्रीरामजीलालजी शास्त्री,

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

वेद भेद पायो नहीं, नेति-नेति कह वैन । ता मोहन सों राधिका, कहत महावर देन ॥

ऐसा ब्रह्म है वह जिसका वेद भी भेद नहीं पा सकते इसलिए वेद बोले – "न इति-न इति" हम नहीं पा सके । **"कामं तूलिकया करेण.................गतिर्लास्यैकलीलामयी ॥"** (श्रीराधासुधानिधि - २०५) श्रीराधिकारानी अपने चरणों में उस ब्रह्म को बैठा के कहती हैं कि महावर की रचना करो और वह करने लग जाते हैं । श्रीकृष्ण हाथों में विशेष तूलिका (ब्रश) लेकर के श्रीजी के चरणों में महावर देने बैठ जाते हैं । ऐसी हैं राधिकारानी, जिनके चरणों में बैठकर ब्रह्म श्रीकृष्ण भी महावर की रचना करते हैं ।

वेद में ब्रह्म का स्पष्ट रूप से प्रतिपादन तो किया गया है किन्तु एक गोपनीय धन को छिपा लिया है । वह गोपनीय धन हैं श्रीराधिकारानी; गुप्त रूप से उपनिषदों के भीतर जो विद्या है, उनका मूल 'श्रीराधिकारानी' हैं । उन्हीं श्रीराधिका के जो दो गोरे-गोरे चरण हैं, वही श्रीकृष्ण की गति हैं, सार हैं, जिसको कोई जान नहीं सकता । स्कंदपुराणोक्त श्रीमद्भागवत माहात्म्य में लिखा है कि श्रीकृष्ण अनन्त जीवों की आत्मा हैं और उनकी भी आत्मा हैं 'श्रीराधिकारानी' ।

आत्मा तु राधिका.....प्रोच्यते गूढवेदिभिः ॥ (श्रीस्कन्दपुराणोक्त, भागवतमाहात्म्य - १/२२)

कृष्ण को कैसे वश में किया जाय ? "सब वेद पुराणों ने यह सार विचारा है । प्रभु को वश करने का राधा नाम सहारा है ॥"

एक बार सखियों ने विचार किया कि कृष्ण को कैसे वश में किया जाय? तो विचार किया कि बड़ा सीधा उपाय है किसी के सिर पर अभिमंत्रित करके वशीकरण चूर्ण रख दो तो वह तुम्हारे वश में हो जाता है किन्तु ब्रह्म तो स्वतंत्र है, वह कैसे वश में हो जायेगा ? वश में जरूर हो जायेगा, उसको भी वश में करने का एक चूर्ण है । ब्रह्मा, शंकर, नारद आदि को भी वह दिखाई नहीं पड़ता, बड़ा दुर्लभ है परन्तु उसको भी वश में करने का एक उपाय है । जहाँ बरसाने में राधिकारानी के चरण पड़ते हैं वहाँ चले जाओ, गह्वरवन चले जाओ, मानमंदिर चले जाओ, यहाँ श्रीजी के चरणों में श्रीकृष्ण लोटा करते हैं । यहाँ की रज ले लो । सखियों ने यही किया । **"योब्रह्मरुद्रशुकनारद.....राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ॥"** (श्रीराधासुधानिधि - ३)

जिसको भी श्रीकृष्ण को वश में करना था, उन्होंने श्रीराधारानी के चरणों का चूर्ण लेकर श्रीकृष्ण के माथे पर लगा दिया और वह वश में हो गये । यही आप करो और अगर आप वहाँ नहीं जा सकते हैं तो सिर्फ राधारानी के चरणों का स्मरण ही कर लो । इसी से श्रीकृष्ण वश में हो जायेंगे । ये 'राधा' नाम श्रीकृष्ण को वश में कर देता है । क्या राधा नाम में श्रीकृष्ण से अधिक शक्ति है ? हाँ, श्रीराधा नाम में श्रीकृष्ण से अधिक शक्ति है । श्रीकृष्ण ने अनन्त गोपियों को ही नहीं सारे ब्रह्माण्ड को वंशी से वश में किया था परन्तु उस वंशी को उन्होंने राधा नाम से ही सिद्ध किया था । पुराणों में लिखा है कि महारास करने से पहले श्रीकृष्ण ने राधारानी का आश्रय लिया था, नहीं तो महारास नहीं कर सकते थे ।

भगवानपि ता..................योगमायामुपाश्रितः ॥ (श्रीभागवतजी - १०/२९/१)

उन्होंने योगमाया का सहारा लिया, योगमाया अर्थात राधिका रानी जो नित्य उनके साथ रहती हैं । श्रीकृष्ण ने मुरली से कहा कि मुरली तुझको मैं वशीकरण मन्त्र सिखाता हूँ; तू इस मन्त्र को सीख ले फिर तू अनन्त कोटि गोपियों को तो क्या, सारे ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा, विष्णु, शिव तक को भी वश में कर लेगी । ये मन्त्र मैं तुमको देता हूँ "रट री मुरली राधे राधे ।" ये रसिकों का पद है । मुरली श्रीकृष्ण से बोली कि आप कहते हैं कि मैं राधा-राधा रटूँ तो क्या राधारानी आपसे बड़ी हैं? भगवान् बोले कि अरी मुरली ! राधा ही मेरा साधन है, राधा ही आराधन है । मुरली को गुरु के रूप में श्रीकृष्ण शिक्षा दे रहे हैं कि मुरली तू इस राधा नाम की आराधना कर । तेरे अंदर शक्ति आ जायेगी । राधारानी रस की सीमा हैं और रस की पराकाष्ठा

हैं । मैंने तुमसे इतना प्यार क्यों किया ? मुरली, मैं तुझे अपने होठों से क्यों लगाता हूँ क्योंकि तू राधे-राधे रटती है । इसलिए मैंने तुझे इतना सम्मान दिया । श्रीकृष्ण वंशी में ये ही गाते हैं और कुछ नहीं गाते हैं । ये प्रमाण है । वंशी ने यही 'क्लीं' बीज मन्त्र गाया था, 'क्लीं' राधा नाम का बीज मन्त्र है ।

श्रीकृष्ण यमुना किनारे चले जाते हैं और किसी एकान्त कुञ्ज में साधन करते हैं, ये श्रीकृष्ण का भजन है । रासपंचाध्यायी में ३२ वें अध्याय का २१वाँ श्लोक है । भगवान् कैसे राधारानी का भजन करते हैं ? यमुना किनारे किसी एकांत में चले जाते हैं, वहाँ बैठकर राधारानी के चरणों का ध्यान करते हैं । आँखों में आँसू भरके राधा-राधा जपते हैं ।

आराधना करो तो इष्ट खिंचता है, आता है । राधा नाम रटोगे तो राधारानी सम्मोहित होकर के आयेंगी । दो अक्षर वाले जिस राधा नाम को श्रीकृष्ण रटते रहते हैं वह यदि हमारे ध्यान में भी आ जाय तो सबसे बड़ा सहारा मिल जाय । श्रीकृष्ण का भी एकमात्र सहारा 'राधा नाम' है । इस परमतत्व को जानना कोई छोटी-मोटी बात नहीं है । ब्रह्म ज्ञान के बारे में भगवान् ने गीता में कहा है – **भक्त्या मामभिजानाति .... विशते तदनन्तरम् ॥** (श्रीगीताजी - १८/५५)

तुम ब्रह्म रूप हो जाओगे पर मेरे रस रूप को नहीं जान पाओगे । ब्रह्मरस के आगे भी कोई रस है और वह है भक्ति रस । वो भक्ति रस राधारानी ही देने वाली हैं । धन्य हैं श्रीराधारानी के चरण जिनमें श्रीकृष्ण हर क्षण गिरते हैं । जितने साधन हैं हम उनको नहीं जान सकते, हम अन्धे हैं, अन्धा क्या देखेगा और क्या जानेगा? लेकिन एक बात है । अन्धे की लकड़ी सा, राधा नाम हमारा है । भागवत में कहा है कि भगवान् के चरणों का आश्रय ले लो –

मन्येऽकुतश्चिद्भयमच्युतस्य..............निवर्तते भीः ॥ (श्रीभागवतजी ११/२/३३)

अन्धे बन जाओ, आँख बंद कर लो । जो होशियार बनते हैं बनने दो, जो आँखे खोलते हैं खोलने दो पर तुम आँखें बंदकरके दौड़ जाओ, तुम पार हो जाओगे । ऐसे अन्धे बनना कि केवल लकड़ी का सहारा हो । इसलिए हम ऐसे ही अन्धे हैं, आँख बंद कर लीं हैं और दौड़ रहे हैं, न लड़खड़ायेंगे और न गिरेंगे । तुम आँख खोले हुए गिर जाओगे और हम अन्धे होते हुए भी पार हो जायेंगे ।

ये हमने भागवत से प्रमाण दिया अब राधासुधानिधि से भी प्रमाण दे रहे हैं । जो श्रीजी के नाम और चरणों के आश्रित होते हैं उनके लिए वेदों के कर्म करना या न करना, विषयों को ग्रहण करना या न करना कोई मायने नहीं रखता । इसलिए आँख बंद करके दौड़ जाओ और एक दम सौ प्रतिशत अन्धे बन जाओ । जो वेदों में गुप्त बात थी वो मिल गयी है । अनादिकाल से हमको ये गुप्त बात पता नहीं चली क्योंकि अगर ये बात मिल जाती तो अब तक हम प्रभु के पास पहुँच जाते । नहीं पता चला तभी तो भटक रहे हैं । ये बात तो श्रीजी के जनों के पास जाकर ही पता चलती है । अब हमें किनारा मिल गया है ।

(राधा ! राधा ! राधा ! राधा ! राधा ! राधा !)

जब भी प्रभु से प्रार्थना करो या बात करो तो इस प्रकार करो कि वह तुम्हारे सामने खड़े हैं । प्रभु तुम्हारे सामने खड़े हैं, इस बात का विश्वास रखो । जो भी बोलो, भाव के साथ बोलो । खुले मन से बोलो । प्रभु में डूबकर बोलो कि प्रभु तुम्हारी बात को सुन रहे हैं, प्रभु तुम्हें देख रहे हैं । कोई क्या कर रहा है और क्या कह रहा है, उधर ध्यान मत दो । मन को एकाग्र करके प्रभु से प्रार्थना करो । हे नाथ ! मैं आपके गुणों की गाथा सुनकर आपके पास आया हूँ, मैंने सुना कि आप पतित-पावन हैं । मैं भी आज अपनी किस्मत अजमाने आपके पास आया हूँ । मैंने सुना है कि आप भक्ति-भाव से रीझते हैं परन्तु मेरे पास तो न भक्ति है और न ही भाव है । मैंने सुना है कि लोग आपको सत्कर्मों से रिझाते हैं परन्तु मेरे पास तो न अच्छे कर्म हैं और न ही अच्छा स्वभाव है । मैंने तो हर पल भोगों में काटा है । मेरे पास तुम्हें रिझाने के लिए कुछ भी नहीं है । मेरे पास सुंदर मन भी नहीं है । मेरे पास दान देने को धन भी नहीं है । मेरा तो कोई भी ठौर-ठिकाना नहीं है ।

मेरे पास कुछ भी नहीं है परन्तु एक बात है, वो भी पता नहीं कहाँ से आ गयी ? पता नहीं मैं आपसे निष्कपट कैसे हो गया ? मैंने आपसे कुछ नहीं छिपाया, जो जैसा है वैसा ही मैंने आपके सामने रख दिया है । मेरी सब तरफ से बात बिगड़ी है परन्तु एक तरफ से बन गयी । मैं आपके सामने निष्कपट हो गया और मैंने सुना है कि आपके सामने निष्कपट होते ही सब

पाप जल जाते हैं । हे नाथ ! अनादिकाल से मैं प्यासा जगह-जगह पानी माँगता फिर रहा हूँ । मैं कहाँ-कहाँ नहीं भटका ? कभी परिवार वालों के पास, कभी दोस्तों के पास, कभी रिश्तेदारों के पास; किन्तु कोई भी मेरी प्यास नहीं बुझा पाया । वे सब तो मेरे से भी ज्यादा प्यासे निकले । वे तो उल्टा मेरे से जल माँगने लग गये । मैं उनके पास प्रेम की इच्छा से व सुख की इच्छा से गया था परन्तु वे तो मेरे से भी ज्यादा अंधे निकले ।

हे प्रभो ! मेरा कुछ तो उपाय कर दो । मैं इस छलिया संसार में प्यासा भटक रहा हूँ । आप सिर्फ एक बार मुझे देख लोगे, सिर्फ एक बार मुझे निहार लोगे तो मैं हारा हुआ भी जीत जाऊँगा । हे नाथ ! जैसे मछली के लिए जल ही जीवन होता है, वैसे ही मेरे लिए आपका नाम जल है । मैं इस संसार में एक दीन मछली हूँ, जो सिर्फ आपके नाम के सहारे जी रही हूँ । मछली तो फिर भी बिना जल के जी सकती है परन्तु मैं आपके नाम के बिना नहीं जी सकता । अगर मैं आपसे झूठ बोल रहा हूँ तो आप मेरी जीभ काट देना । मेरा आपके सिवा कोई भी नहीं है । आप कृपा करके मेरी ओर एक बार बस निहार लो ।

हे प्रभो ! माया में फँसा जीव इस भवसागर से कैसे पार हो सकता है? हमारे पास न कोई ज्ञान है और न ही कोई भक्ति है । हमारे पास तो केवल एक ही सहारा है, वो सहारा आपकी कृपा है । आपकी कृपा से ही हमारी नैया पार लग सकती है । जैसे एक बालक के लिए माँ की गोद ही सब प्रकार से शरण होती है, वैसे ही हमारे लिए आपकी कृपा की गोद ही एक मात्र शरण है । हम इसके अतिरिक्त कुछ न ही जानते हैं और न ही जानना चाहते हैं । हम तो केवल आपकी कृपा की बाट निहारते हैं । हे दीनानाथ ! अगर आप मेरे गुणों की ओर देखोगे तो कभी भी कृपा नहीं कर पाओगे । अगर आप मेरे अच्छे कर्मों की ओर देखोगे तो आप पतित-पावन कैसे कहलाओगे? ऐसा कोई भी पाप या अपराध नहीं है जो मैंने नहीं किया । हे पाप नाशन दीन बन्धो ! पर आप उधर की तरफ से आँखें बंद कर लें, तभी मेरा कल्याण हो सकेगा । आप तो दीनों के नाथ हैं, मुझे भी अपनी दया दिखाइये । हे कृपानिधान ! मैं तो आपकी शरण में आया परन्तु काम, क्रोध अभी भी मेरा पीछा नहीं छोड़ रहे हैं; हे नाथ ! मुझे इनसे बचाओ । मुझे अपनी निज कृपा-शक्ति दिखाओ । जैसे सूर्य और अन्धकार एक साथ नहीं रह सकते, वैसे ही राम और काम एक साथ नहीं रह सकते ।

हे प्रभो ! मैं तो तेरे सहारे हूँ, मुझे इन काम, क्रोध से बचा लो । मेरे हृदय में ऐसा दर्द दे दो कि मैं दिन-रात बस तेरे लिए ही तड़फा करूँ । मैं तेरे दर्द में दुनिया को तो क्या, अपने आपको भी भूल जाऊँ ? सब लोग अपने को याद रखना चाहते हैं और तुझे भूल जाते हैं । हे दयानाथ ! दया करके मुझे सब कुछ भुलाकर सिर्फ अपनी याद दे दो, अपना दर्द दे दो । प्रेम की राह पर हर कोई नहीं चल सकता । यह राह मोम के घोड़े पर चढ़कर आग में चलने के समान है । ये प्रेम की राह बड़ी टेढ़ी है, इस पर वासना वाले नहीं चल सकते । ये वासना या तो प्रेम को जला देगी या फिर ये प्रेम की आग समस्त वासनाओं को जला देगी । इस प्रेम के रास्ते पर सुंदर फूलों का दर्शन नहीं है, इस रास्ते पर काँटों की शय्या पर सोना होता है; शीतल सुखों की आशा छोड़कर, विरहाग्नि में जलना होता है । विषयों के भोगी तुम दूर से ही भाग जाओ, इस पंथ से बचकर भागना फिर मुश्किल है ।

जैसे हनुमानजी ने कहा था कि भजन करना तो दूर, हम जानते ही नहीं कि भजन क्या है? वैसे ही प्रभु मैं भी कुछ नहीं जानता । बच्चा कुछ नहीं जानता । बच्चा तो इतना करता है कि दौड़कर माँ की गोद में जाकर बैठ जाता है अर्थात् भक्त प्रभु के शरणागत हो जाता है । हे नाथ ! मैं आपकी शरण में आ गया हूँ, अब आप मुझ पर दया करें । मैं आपके बिना कुछ और नहीं जानता । हे दीनानाथ ! आप मुझ पर अपनी दया बरसायें । प्रभु-प्राप्ति का साधन तो मुझे मालूम नहीं तो प्रभु कैसे मिलेंगे? जब कोई साधन ही नहीं जानता तो सिद्धि कैसे मिलेगी ? जो व्यक्ति समझता है कि हम साधन करना जानते हैं, वह अनजान है । ये बात हनुमान जी ने भी कही कि जितने भी संसार में जीव हैं, उनमें से केवल मैं ही एक ऐसा हूँ जो साधन-भजन कुछ नहीं जानता हूँ । सच्चे संत भी यही कहते हैं कि मैं कुछ नहीं जानता । हरिदासजी भी कहते हैं कि मैं कुछ नहीं जानता हूँ । गोसाईं तुलसीदासजी भी यही कहते हैं कि "मैं हरि साधन करी न जानी ।" हे नाथ ! मेरे ऊपर उचित कृपा कर दीजिये । भक्त लोग कहते हैं कि हमें सुगति भी नहीं चाहिए परन्तु फिर भी प्रभु चरणों से प्रेम तो चाहिये । प्रभु का सहारा

पकड़ना चाहिये, नहीं तो जीव अनन्त काल तक दुःख भोगता रहेगा । चलकर देखो बीमारों को, बुढ्ढों को, मरने वालों को, इससे तुमको ज्ञान मिलेगा कि यही संसार है । इसको ही संसार कहते हैं, जिसे जीव देख नहीं पाता । ये कभी नहीं सोच पाता कि एक दिन ऐसा आयेगा कि न पाँव चलेगा, न ही हाथ उठेगा । क्या कभी भी कोई बीमार सोचता है या कभी कैंसर वाला सोचता है कि मुझे कैंसर होगा ? हे नाथ ! हम कभी नहीं सोचते कि हमारा क्या होगा ? हे नाथ ! मुझ पर दया कर दो, मैं गिरा हुआ हूँ । हे नाथ ! मुझ पर कृपा कर दो, मैं कर्मों से जकड़ा हुआ हूँ । दया करके मुझे अपनी शरण में ले लो । हे नाथ ! मैं अन्धा हूँ, माया से जकड़ा हूँ । हे नाथ ! जैसे सिंह को कोई मार नहीं सकता है पर जब मरता है तो किसी गुफा में भूखा मर जाता है । इसी तरह से जीव नहीं जानता कि उसकी क्या गति है ? हे नाथ ! मेरे ऊपर उचित कृपा कर दीजिये । आप पतित-पावन हैं और मैं पतित हूँ । आप अशरण शरण हैं । जिसकी कोई शरण नहीं है, उसको आप शरण देते हैं, ये उचित कृपा है । आप बस ऐसा कर दो कि सिर्फ़ आपके ही चरण याद रहें, बाकी संसार की सब बातें भूल जाऊँ । दीनानाथ ! मुझे अपनाइये, मुझे अपनी दया दिखलाइये ।हे नाथ ! आपका तो बहुत मीठा-मीठा मधुर शीतल स्वभाव है । हे प्रभो ! आपने कभी भी करुणा करने में देर नहीं लगाई । आप मेरी बार इतनी देर क्यों लगा रहे हो? मेरी टेर सुनो प्यारे मोहन मुरली वाले । प्रभु आप तो सुलभ हैं । बहुत जल्दी मिलते हैं । आपने ही अर्जुन से (गीता ८/१४ में) कहा था कि हे पार्थ ! मेरा जो अनन्य स्मरण करता है, मैं उसे बहुत जल्दी मिलता हूँ; इसीलिए हे प्रभो ! मेरे ऊपर भी करुणा करो । अब मैं किसकी शरण में जाऊँ? प्रभु आप तो सर्वज्ञ हैं । आप मेरे हृदय में देखलो, वासनाओं का समुद्र है । हे भगवान् ! आपने अजामिल जो महापापी था, गणिका जो वैश्या थी, सबका उद्धार किया । आपकी शरण में आने से उन सबका उद्धार हो गया । आप नाव हैं जिससे जीव इस भवसागर से पार चला जाता है । हे केशव ! इस संसार से मुझे भी छुडाओ, इन वासनाओं से मुझे भी बचाओ । हे गोविन्द ! हे मुरारी !! मेरा क्या बिगड़ेगा ? किन्तु मेरे पतन से तुम्हारा विरद और यश कलंकित होगा । तुम ही मेरे मालिक हो, तुम ही मेरे ठाकुर हो । हे नाथ ! अगर मेरे कर्मों की ओर देखोगे तो आप कभी भी मेरा उद्धार नहीं कर पाओगे । हे प्रभो ! आप मुझ पर कब दया करोगे? मैं आपकी दया से ही मुक्त हो पाऊँगा । हे प्रभो ! मेरी रक्षा करो । मैं कोई भी साधन नहीं जानता । आप ही शरण में आये की लाज रखो, दया करो । मैं चौरासी लाख योनियों में घूमता रहा और अनन्त दुःख पाता रहा फिर भी मेरी भोग तृष्णा शान्त नहीं हुई ।

एक बार श्रीकृष्ण द्वारिका में बैठे थे तो देखा एक चींटा चींटी का पीछा कर रहा था । श्रीकृष्ण हँस गये । रुक्मिणीजी बोलीं कि क्या हुआ ? तो भगवान् बोले कि मैं इस चींटे पर हँस रहा हूँ, इसे मैंने चौदह बार इन्द्र बनाया । एक इन्द्र के पास भोगने के लिए करोड़ों अप्सरायें होती हैं फिर भी इसकी भोग वृत्ति नष्ट नहीं हुई, देखो अब कैसे ये चींटी के पीछे दौड़ा जा रहा है । इसी तरह हे प्रभो ! मैं भी पहाड़ों में, जंगलो में, गुफाओं में, जल में, थल में, अनेकों रूप धारण करके कष्ट पाता रहा फिर भी मेरी भोग तृष्णा शांत नहीं हुई । आप मुझे बचाइये । आप पतित पावन हैं परन्तु मुझ पतित को कैसे भूल गये? हे दीनानाथ ! हे प्रभो ! मैं भी आपकी करुणा का भिखारी हूँ, मेरी ओर भी निहारो ।

हे प्रभु ! मुझे आपसे सुमति, सुगति की कामना नहीं है । तो क्या चाहते हो? प्रेम केवल प्रेम । भगवान् के चरणों में केवल प्रेम चाहिए, तो बेड़ा पार । सुमति, सुगति की कामना भी नीच है । ये शॉल-दुशाला तुच्छ चीजें हमें भगवान् से दूर कर देती हैं । सब लोग सोचते हैं कि हम नरक से बच जावें । अरे नहीं, नरक भी आता है, तो आने दो, कमजोर मत बनो ।

हे महाराज ! हे मेरे इष्टदेव, मेरे कुटिल कर्म मुझे नरक में ले जाएँ तो जाने देना आप रोकना मत, आप कष्ट मत करना; इसको कहते हैं प्रेम, बहादुर बनो, नीच मत बनो; किसी भी प्रकार की कामना नीच है । कर्म बलवान होते हैं, ये जीव को कहीं से कहीं ले जाते हैं । रावण कितना बलवान था लेकिन समय आने पर कर्मों ने पटक दिया । इसलिए बस प्रभु आपका स्नेह, आपकी स्मृति बनी रहे, मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए । नरक मिल गया तो कोई बात नहीं । आपकी स्मृति की डोर हमें, नरक से भी निकाल लाएगी । समुद्र में कछुआ अपने अण्डे को किनारे रख आता है और कोसों दूर चला आता है, वहीं से अण्डे का चिन्तन करता है और उस चिन्तन से अण्डे का पालन होता है । पक्षी अपने अण्डे को अपने पंख से स्पर्श करता

है और उससे ही अण्डा बढ़ता है । मछली अण्डे को देखती है, उसकी दृष्टि से ही अण्डा बढ़ता है यानि सृष्टि में भावना शक्ति के विचित्र-विचित्र चमत्कार हैं । उसी तरह से हे नाथ ! केवल आपकी स्मृति, आपका स्नेह रहे, आपका चिन्तन बना रहे फिर किसी चीज की परवाह नहीं । यदि कहीं से कृष्ण-विरह मिल जाए तो प्राण देकर भी उसे खरीद लो । प्राणों से मिले तो भी वह बहुत सस्ता है लेकिन इसका मूल्य उत्कंठा ही है । उत्कंठा माने प्रभु से कैसे मिलें ? करोड़ों जन्मों के साधन से भी ये उत्कंठा नहीं मिलती । मिलती है तो केवल भगवद्-प्रेमियों के पास से । केवल भक्तों की चरण-रज में स्नान करने से मिल जाती है । विरह की उत्कंठा मिली मीरा को; कोई भी औषधि काम नहीं आयी । किसी ने पूछा, तू क्यों रो रही है मीरा ? मीरा बोली कि जिस पानी में मछली पैदा होती है, उसी पानी में मेढ़क भी पैदा होता है, कछुआ भी पैदा होता है लेकिन जो प्रेम मछली जानती है वह प्रेम मेढ़क और कछुए नहीं जानते । मछली पानी के बिना मर जायेगी । इसी तरह मैं भी गिरधारी के बिना मर जाऊँगी । मेंढक तो सूखे में सालों बेहोश पड़े रहते हैं पर मरते नहीं लेकिन मछली पानी के वियोग में मर जाती है । वैसे ही मैं हूँ, मैं गिरधारी के बिना नहीं जी सकती । हम लोग तो कछुआ और मेंढक हैं, जिनको प्रभु से प्रेम ही नहीं है । भक्त प्रभु-प्रेम के बिना नहीं जी सकता है ।

साहिब तुम ना बिसारियो, लाख लोग लग जाहिं । हमसे तुमको बहुत हैं तुमसे हमको नाहिं ॥
एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान । पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान ॥

हे नाथ ! मैं आपको भूल गया क्योंकि मैं तो एक जीव हूँ । मैं आपको भूला तो ठीक है क्योंकि मैं मोहग्रस्त, मंद बुद्धि, कुटिल, कपटी, अज्ञानी हूँ परन्तु आप कैसे मुझे भूल गये? हे दीनबन्धु, अगर आप ये कहेंगे कि तुम तो भूलने लायक हो क्योंकि तुम कुटिल हो तो मैं ये कहूँगा कि हे नाथ ! चाहे मेरे अवगुण बहुत हैं पर आप तो प्रभु हैं, सेवक तो नीच होता ही है । हे नाथ ! आप मुझे मत बिसारो । संसार के जितने भी जीव हैं आपकी माया के मोह में आपको भूल चुके हैं । हर जीव आपको भूल करके माया की यातनाओं में पिस रहा है । उनसे वो तभी पार हो सकता है जब आपकी कृपा, आपकी दया होती है । हनुमान जी बोले हे प्रभु ! संसार में जितने जीव होंगे उनमें से सबसे निकम्मा मैं हूँ पर जैसे शिशु माँ को भूल सकता है लेकिन माँ कभी नहीं भूलती, वैसे ही आप मुझे मत भूलिये ? वही बात मैं यहाँ प्रभु से कह रहा हूँ कि हे दीनानाथ ! आप मुझे मत बिसारिये । जब बच्चा पैदा होता है तो माँ को भी नहीं पहचानता पर माँ पालन करती है । शिशु इतना नासमझ होता है कि माता की गोद छोड़ देता है और बिच्छू, सांप, अग्नि आदि को पकड़ने दौड़ पड़ता है । कैसा मूर्ख है कि माँ की गोद को छोड़ करके बिच्छू के पीछे दौड़ता है पर माँ बच्चे को दौड़ करके बचाती है । बच्चे के अपराध पर ध्यान नहीं देती कि मेरी गोद छोड़ के क्यों गया ? उसी तरह हे नाथ ! मैं आपका शिशु हूँ, मेरी ओर निहारो । कबीरजी ने भी लिखा कि हरि जननी मैं बालक तेरा । हे कृष्ण रूपी माँ, हे मेरी कृष्ण माँ, मैं तेरा बालक हूँ । बालक माँ की चोटी पकड़ के लात मारता है । जब माँ गोद में लेती है तो गोद में मल आदि छोड़ देता है, उसके कपडे गन्दे कर देता है । ऊपर से जब माँ स्तन से दूध पिलाती है तो दूध पीते हुए भी लात मारता है परन्तु माँ फिर भी उस बालक को नहीं छोडती ।

हे राधे ! उसी तरह आप भी मुझे मत बिसारो । जब गाय के बछड़ा पैदा होता है तो तमाम गंदगी से लिपटा होता है । पता नहीं कितनी गन्दगी पेट में होती है लेकिन गौ माँ उस बच्चे को चाट-चाट के उस बच्चे की गंदगी को दूर कर देती है इसलिए गाय को वत्सला कहा जाता है । गाय के समान बच्चे को कोई प्यार नहीं कर सकता । बच्चे की गंदगी को भी माँ चाट-चाट के साफ कर देती है, उसकी गंदगी से भी प्यार करती है ।

हे नाथ ! हे राधे !! तुम तो वात्सल्य की मूर्ति हो । हे वात्सल्य की मूर्तिमयी राधा, हे करुणामयी माँ, मुझे न बिसारो ।

प्यारी तेरो भलो बनो बरसानो ।
पीरी पोखर प्रेम सरोवर, भानोखर को न्हानो ।
गहवर वन और खोर सांकरी, संतन को मनमानो ।
'नागरिदास' वास बरसानो, भानोमति जगजानो ॥

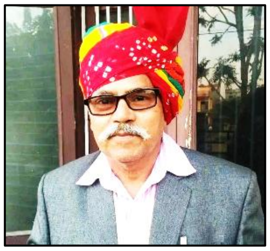

भारत माता का वैभव 'गौवंश'

लेखक-वैद्य महावीर प्रसाद शर्मा (राज.) पञ्चगव्य शोध चिकित्सा शिविर, कमला नगर, आगरा
वर्तमान सेवारत-श्रीमाताजी गौशाला, आयुर्वेद औषधालय, बरसाना (मथुरा)

घर-घर गाय, ग्राम-ग्राम गोशाला । यही है हमारी निरोगशाला ॥

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥

उत्तम बुद्धि वाली, सुरभि, ब्रह्माजी की सुतायें, अति पवित्र गौमाताओं को नमस्कार करता हूँ ।

गाश्च स्पृशतु पादेन गुरुन् परिवदेत च । (वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड)

भरतजी माता कौशल्या को आश्वस्त करते हुए – 'यदि श्रीराम को वनवास भेजने में मेरा तनिक भी भाव-विचार या योग हो तो मुझे गोमाताओं को पाँव से छू जाने का महापाप लगे ।'

उस जमाने में गोमाताओं को मनुष्य के पाँव से छू जाने को भी महापाप माना जाता था । महाभारत काल तक भारत में गौविज्ञान उत्कृष्ट स्थिति में था । 'गवायुर्वेद' नामक एक आयुर्वेद-शास्त्र था, उसकी पुष्टि महाभारत के एक उदाहरण से होती है । महाभारत के विराट पर्व में एक प्रसंग है । पाण्डवों को अपना अज्ञातवास बिताने के लिये राजा विराट के पास जाना पड़ा था । राजा विराट ने सभी को अपने-अपने कार्य की दक्षता बताने के लिए कहा, तब सहदेव ने अपनी बारी आने पर अपने आपको गौविज्ञान में दक्ष बतलाते हुए अपना परिचय इस प्रकार दिया –

ऋषभाश्चापि जानामि राजन् पूजितलक्षणान् । येषां मूत्रमुपाघ्राय अपि बन्ध्या प्रसूयते ॥ (महाभारत, विराटपर्व)

मैं उत्तम लक्षणों वाले उन बैलों को भी जानता हूँ, जिनके मूत्र को सूंघ लेने मात्र से बन्ध्या स्त्री भी गर्भधारण एवं सन्तान उत्पन्न करने के योग्य हो जाती है ।

उक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि उस काल के गो विज्ञान से मानव रोगों पर सफल प्रयोगों की पुष्टि होती है । इस उत्कृष्ट विज्ञान का लोप हो जाने से आर्यावर्त भारत आज पाश्चात्य सभ्यता पर मुग्ध होकर गंगा, गाय, गायत्री और गीता की उपयोगिता प्रायः भूल चुका है । देश की यह स्थिति इसलिए हो गयी है कि समाज में गंगा अर्थात् निर्मल जल, विषैले तत्त्वों से रहित शुद्ध जल नहीं रहा । गो मूत्र, गोबर की खाद से खेती की जगह रासायनिक खाद, जहरीली कीट नाशक दवाओं से धरती और अन्न विषैले हो गये हैं । कुछ आधुनिक महापुरुष गाँवों में बड़े गर्व के साथ कहने लगे हैं कि हमारे बच्चे गाय के दूध को पीने से नफरत करते हैं । इससे अधिक लज्जाजनक बात और क्या हो सकती है ? गायत्री – गायत्री से तात्पर्य त्रिकाल संध्या भजन, जप से है । यदि त्रिकाल संध्या की समाज में व्यवस्था सुचारु रूप से चालू रहती तो सूर्योदय से पहले ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करना अनिवार्य होता यानि प्रातः सूर्योदय से पहले जागना, सात्विक भोजन, पञ्चगव्य सेवन, ध्यान, भजन, जप तथा रात्रि में जल्दी सोना और वैदिक सदाचार से मन प्रसन्न, स्वास्थ्य सही रहने से हाइपरटेन्शन (B.P.), हृदय रोग, विषैले तत्त्वों जन्य घातक बीमारी कैंसर, हेपाटाईटिस, लकवा आदि होने के अवसर कम हो जाते । इसी प्रकार गीता के सिद्धान्तों से संयम से दिनचर्या और जीवनशैली का निर्वाह करने से आवश्यकतायें कम रहेंगी । जब आवश्यकताओं पर काबू रहेगा तो संतोष रहेगा । आपाधापी, मारामारी, चोरी, अन्याय कम रहेगा । सब सभी को अपने समान समझें तो अधिकतर व्याधियाँ नहीं रहेंगी या व्याधियों का उत्पन्न होना कम हो जाएगा ।

देश की दयनीय स्थिति इसलिए हो गयी है क्योंकि समाज में गवायुर्वेद, वृक्षायुर्वेद का ज्ञान सम्पूर्ण रूप से लुप्त हो गया । पञ्च गव्य, गो मूत्र का दैनिक अनिवार्य उपयोग बन्द हो गया । अष्ट सिद्धि और नव निधि प्राप्त करने, इच्छित कामनाओं की पूर्ति हेतु 'ब्रह्मकूच', जिसमें पञ्च गव्य, सप्त गव्य, त्रिगव्य का नाना विधि से प्रयोग का विज्ञान लुप्त हो गया है । इसके सम्पूर्ण प्रचार-प्रसार का व रचनात्मक व्यवहार की आवश्यकता है । वैदिक काल से आज तक पञ्च गव्य पंचामृत मानवोपयोगी बनकर स्वास्थ्य रक्षा कर रहे हैं । इनकी उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता । भारतीय केन्द्रीय

राष्ट्रीय आयुर्वेद चिकित्सा परिषद्, दिल्ली द्वारा संचालित विश्वविद्यालयों के अधीन शासकीय, आयुर्वेद महाविद्यालयों के नियमित पाठ्यक्रम में द्रव्य गुण विज्ञान कोर्स में पञ्च गव्य, पंचामृत के घटक पढ़ाये जा रहे हैं ।

यह वैद्य समाज की औषधि करोड़ों भारतवासियों को सरल, सुलभ, सस्ती, निर्विष, आशुकारी, निरापद, दिव्य महौषधि है । सतोगुण प्रदान करती है । आसुरी भाव समाप्त करके मानव को मानव बनाये रखती है । यह देव संस्कृति की संचारिका है ।

गौवंश इस औषधि की जीवित रसायनशाला है, औषधालय है । भारत के कृषि प्रधान देश होने के कारण पूरा का पूरा कृषि विज्ञान ही गौवंश पर आधारित है । गौमय, गौमूत्र के खाद, कीट नियन्त्रक (तरल या ठोस) ने तो सदैव से भारत को शस्य श्यामला बना रखा था । उससे उत्पन्न अन्न खाकर समाज परम बौद्धिक व शारीरिक रूप से बल प्राप्त करता आ रहा था । जब गोबर की खाद का प्रयोग होता था, गोबर के लिए महाभारत में कहा गया है – **'ऐश्वर्यमयी लक्ष्मी वसते गोमये सदा'** इस प्रकार हम गो आधारित कृषि व गो विज्ञान भूल गये, जिसका परिणाम विषाक्त वातावरण हो जाने से विषाणु जन्य व्याधियाँ फ़ैल गयी हैं । और तो और सूर्य की रश्मि अल्ट्रा वायलेट रेज से विषाक्त हो गयी है, जिससे स्किन (त्वचा) कैन्सर तथा अन्य चर्म रोग फ़ैल रहे हैं । इन सबका समाधान गोमाता के पास ही है क्योंकि वह तो अमृत से ही उत्पन्न हुई है । वेद में प्रार्थना की गयी है – जीवन्तु अवध्र्याः तामे विषस्य दुषणीः अर्थात् अवध्य गौवें जीवित रहें, वे विष को दूर करती हैं ।

जिस दिन गोमूत्र की एक-एक बूँद तथा गोमय का एक-एक कण भारत उपयोग करने लग जाएगा, उस समय गो रक्त की एक बूँद भी भारत भूमि पर नहीं गिर पायेगी और गो माँस का निर्यात भी बन्द हो जायेगा ।

गो मूत्र कैंसर रोधी ही नहीं जीवाणु रोधी (anti viral and biotic) सिद्ध हो गया है । अमेरिका ने औषधि पेटेन्ट न. 6410059 यू.एस.ए. के फील्ड ऑफ़ सर्च फाइल न. 424/558 U.S. Patent department के अनुसार गोमूत्र कैंसर व जीवाणु जन्य व्याधियों के लिए गोमूत्र को प्रतिरोधक सिद्ध माना है ।

१.नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, जुलाई ०४ के अनुसार सन् २००२ में गो मूत्र मिश्रित औषधि को अमेरिका ने पेटेन्ट करवा लिया ।

२. The Indian express, New Delhi 04 july 2002 – cow urine is n't all but US Patent.

३. Hindustan Times, New Delhi 04 july 2002 – cow urine gets U.S. Patent .

४. राष्ट्रीय सहारा, नई दिल्ली ०४ जुलाई २००२ - कैंसर रोधी दवाओं का असर बढ़ाने में गोमूत्र कारगर

गाय के गोबर और गौमूत्र में पाए जाने वाले तत्त्व और उनसे होने वाले लाभ -

१.नाइट्रोजन – रक्त की विषमयता को निकालता है ।

२.सल्फर – इससे वृहत् अत्र की पुरः सरण गति को उत्तेजना मिलती है । रक्त शोधक होता है ।

३.अमोनिया – अत्यधिक अम्लता से शरीर की रक्षा करता है ।

४.अमोनिया गैस – यह शरीर धातुओं को, रक्त संगठन को स्थिर करता है । फेफड़े और अन्य अंगों को संक्रमण से रोकता है ।

५.कॉपर – शरीर की जीवाणुओं से रक्षा करता है । अनुचित मेद या उभार को बनने से रोकता है ।

६. आयरन – रक्त में उचित लाल कणों का निर्माण बनाए रखना, कार्यशक्ति को स्थिर रखता है ।

७.यूरिया – मुत्रक उत्सर्ग पर प्रभाव रखता है, कीटाणु नाशक है ।

८.यूरिक एसिड – शोथ नाशक मुत्रक होने से वृक्क व्याधियों में लाभकारी और विषनाशक है ।

९. फास्फेट – मूत्रवाही संस्थान से सिकता कण निकालने में सहायक ।

१०.सोडियम – रक्तशोधक एवं अम्लता नाशक ।

११.पोटेशियम – कौटुम्बिक सावधि अंगघात, क्षुधा नाश, आलस्य नाशक तथा माँसपेशी दौर्बल्य में लाभप्रद ।

१२.मैगनीज – रोग प्रतिरोधिनी शक्तिवर्धक, सड़ांध व गैंगरीननाशक ।

१३.कार्बोलिक – कीटाणुनाशक, कीटाणु बनने से रोकना ।

१४.कैल्शियम – अस्थिशोधक, रक्तशोधक, जन्तुघ्न, रक्त स्कन्धक है ।

१५.साल्ट – दूषित वृण, नाड़ी वृण, मधुमेह जन्य सन्यास, विष रक्तता, आम्ल रक्तता, शय्या वृण को भरना तथा जन्तुघ्न है ।

१६.विटामिन B,D,C,E – उत्साह स्फूर्ति बनाए रखना, घबराहट व प्यास से बचाता है, अस्थि पोषक तथा प्रजनन शक्ति दायक ।

१७.अन्य मिनरल्स – शरीर को रोग से संघर्ष करने की शक्ति देता है तथा शरीर का निर्माण करता है ।

१८.लेक्टोज – तृप्ति रहती है, भूख-प्यास व घबराहट मिटाता है ।

१९.एन्जाइम्स – भोजन पचाने में सहायक ।

२०.वाटर – रक्त को प्रवाहशील बनाए रखता है, जीवनदाता है ।

२१.हिप्यूरिक एसिड – मूत्र द्वारा विषों को शरीर के बाहर निकालता है ।

२२.क्रियेटिनिन – माँसपेशियों को स्वस्थ व लचीला बनाये रखता है ।

२३.हार्मोन्स – आठ मास की गर्भवती गौ के मूत्र में हार्मोन्स होते हैं । दूध देती हुई गाय के मूत्र में पाए जाने वाले हार्मोन्स स्वास्थ्यवर्धक होते हैं ।

२४.आरम हाइड्रा ऑक्साइड AUOH – यह जन्तुघ्न है, रोगनिरोधक, शक्तिदाता, विषनाशक Anti biotic, Anti toxin, Immunity power बढ़ाता है ।

पञ्च गव्य – गौ मूत्र ४० रत्ती, गोबर ८० रत्ती, गाय का कच्चा दूध ६० रत्ती, दही ५० रत्ती, घी ४० रत्ती कुशोदक

त्रिगव्य – गो दुग्ध, गो दधि, गो घृत ।

सप्तगव्य – गोमूत्र, गोबर का रस, गो दुग्ध, गो दधि, गोत्रक, नवनीत, गोघृत ।

पञ्च गव्य – प्रयोग में लाते हैं – गाय का कच्चा दूध १२० ग्राम, गाय का दही ६० ग्राम, गोमूत्र ३० ग्राम का रस १५ ग्राम गाय का घी ७ ग्राम ।

षडगव्य – गो दुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र, गोमय, गो नवनीत

उपरोक्त वर्णित पृष्ठों में मैंने राजवैद्य श्री रेवाशंकरजी शर्मा, रटलाई, जिला झालावाड़ (राज.) को अपना आदर्श मानकर कामधेनु चिकित्सा चन्द्रोदय ग्रन्थ, प्रकाशक आरोग्य मन्दिर, रटलाई, झालावाड़ ३२६०२४)राज.के कुछ तथ्यों को प्रस्तुत करने का प्रयास मात्र किया है ।

प्राचीन काल में गृहलक्ष्मियाँ (स्त्रियाँ) गोबर से रसोईघर, चौक तथा मकान के फर्श पर लेप लगाती थीं, जिससे सूर्य द्वारा आई हुई अल्ट्रा वाइलेट किरणों का विषैला प्रभाव उसी गोमाता के गोबर लेप से नष्ट हो जाता था । घर की स्त्रियाँ खाना बनाते समय प्रथम रोटी गोमाता के लिए बनाया करती थीं । आँच के अंगारे पर गौघृत और मीठा के साथ श्रीभगवान् को भोग लगाया करती थीं । उसी अंगारे से उठा गोघृत का धुआँ वातावरण को सुगन्धमय बनाकर वायु प्रदूषण को रोकने में सहायक बनता है ।

वेदों में कहा गया है कि देवताओं का मुख अग्नि है, अतः हवन कर्म द्वारा देवताओं को दिया जाने वाला भोग अग्नि में समर्पण करने से अग्नि उसके गुणों को कई गुना बढ़ाकर बहुत दूरी तक फैलाने में समर्थ है । जैसे हम अग्नि पर एक चुटकी लाल मिर्च छोड़ेंगे तो उस सम्पूर्ण क्षेत्र के लोगों को वह बहुत थोड़ी मात्रा की मिर्च अत्यधिक कष्ट दे सकती है ।

इसी तरह थोड़ा-सा गोघृत अग्नि के संयोग से अधिक दूरी तक वातावरण को प्रदूषण से मुक्त कर सकता है । अतः हम समझ लें कि गोमाता द्वारा दिया जाने वाला प्रत्येक द्रव्य हमारे लिए अमृत के समान है । हमारी दासता की शताब्दी गुजरने के कारण हमारे प्राचीन ग्रन्थ नष्ट हो गये, जिनमें बहुत कुछ प्राचीन सिद्धियाँ वर्णित थीं । विश्व के किसी भी देश में आकाशवाणी, संजय जैसा दूरदर्शन कार्यक्रम, नारद जी की तरह क्षण-क्षण में सदैव योग बल से अनेक लोकों में भ्रमण, गो रूप धारणकर पृथ्वी माता वैकुण्ठ धाम में भगवान् के दरबार में जाकर पुकार करने का उदाहरण अन्य किसी भी देश में नहीं है ।

गोमूत्र, पञ्च गव्य से जटिल इलाज, ये सारी की सारी बातें एक आश्चर्यजनक या कम समझ में बैठने जैसी लगती हैं । मुझे भी ऐसा लगता था । ऐसा नहीं कि ये सब मिथ्या या काल्पनिक है, विश्वास तो था परन्तु इतना नहीं था कि जो आज अशोक भाईसाहब (आगरा ग्लास हाउस) आगरा के ६३ वर्ष की आयु में तरुणों जैसा गोगव्य पर सेवा कार्य करने का साहस तथा भाई रवीन्द्र प्रताप सिंह धातरे, आँवलखेड़ा, देवेन्द्र प्रताप धातरे, गीता बहन हेल्प आगरा से भाई विनोद प्रजापत, आगरा का उत्साह, उनकी निष्ठा ने मुझे इस क्षेत्र में धकेलकर कार्य करने पर बाध्य कर दिया था ।

मैंने २-३ दिन मजबूर होकर कार्य किया तो गोमाता, गायत्री माता, भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा से इतना तल्लीन होकर निष्ठापूर्वक कार्य किया कि अपने शरीर की भूख-प्यास, थकावट आदि की सुध तक भूल गया । जब ७-८ दिन बाद कैंसर के रोगियों को आंशिक रूप से लाभ हुआ तो आज इस पञ्चगव्य पर पूरा-पूरा विश्वास बन चुका है । मैंने प्रत्यक्ष देख लिया है कि कैंसर के A.I.M.I.S. New Delhi, टाटा कैन्सर, मुम्बई से निराश रोगी इसी गोमूत्र पञ्च गव्य एवं आयुर्वेद दवाओं द्वारा लाभ ले रहे हैं । अतः आप सभी नियमित सेवन कर पूरे परिवार को भयंकर रोगों से बचाने का प्रयत्न करें ।

मोरा कोंहक कोंहक कें बोलैं, आई सावन की बहार ।
नभ में घुर रहे बादर कारे
जैसे ऊपर बजैं नगारे
देख कें मोरा पंख पसारे
झूम-झूम के नांच रहे हैं मंदी परै फुहार ।
ऐसे में निकसे पिय प्यारी
मन में लहर उठी मतवारी
लता-पतन की झूमन न्यारी
पटुका और चुनरिया फहरै सीरी चल रही ब्यार ।
वन विहरैं रस भीनी जोरी
सुन्दर नवल किशोर किशोरी
चले जात गहवर वन ओरी
मधु टपकाय लता फूलन ते बरसावैं रसधार ।
कबहूँ जावैं मोर-कुटी चढ़
कबहूँ देखैं चढ़ै मान-गढ़
कबहूँ गलबैंया विलास-गढ़
धन्य-धन्य ब्रह्माचल विहरैं जहाँ युगल सरकार ॥

(सावन की अंधियारी रात बिजुरिया चमकै आरम्पार
घुप्प अंधेरी नभ में छाई
कारी घटा बड़ी टकराई
मानों है रही बड़ी लड़ाई
गहर गहर के कारे बादर गरजैं बारम्बार ।
बिजरी कौंध रही मतवारी
अँखियन चौंधा दै रही भारी
थिर न रहै ऐसी सटकारी
बड़ी-बड़ी बूंदन मेहा बरस्यौ है गई धारम्धार ।
डरप रही इक ब्रज की नारी
ह्वांई देख रहे गिरिधारी
मन में रीझ बहुत भई भारी
श्री मोहन नें बांह गही जब कीनी तारम्तार ।
कामर की हरि करी खोइया
एकइ में गोरी औ रसिया
लाजन गोरी रोकै हँसिया
बाहर भीतर रस बरसै झर लग गई झारम्झार ॥

श्रीसेवाराधिका 'प्रभुताजी'चरित्र

भावाभिव्यक्ति - परम गौ-सेवक
'श्रीब्रजशरणजीमहाराज'
श्रीमाताजी गौशाला, श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

प्रभुताजी रैदास भक्त की पत्नी थीं । रैदासजी कबीरदासजी के गुरु भाई थे, उन्होंने कहा था – **"मन चंगा तो कठौती में गंगा ।"** – उनकी कठौती में गंगाजी प्रकट हुई थीं । तभी से यह कहावत प्रचलित हुई है । रैदासजी जाति से चर्मकार थे, वे जूते सिलते थे और हर समय भगवान् का कीर्तन किया करते थे । उनके पास एक पानी की कठौती थी, जिसमें वे चमड़ा भिगोते थे । रैदासजी की भक्ति के प्रभाव से उसी कठौती से गंगाजी प्रकट हुई थीं । ऐसे प्रभावशाली रैदासजी थे । उनकी पत्नी भी उनसे कम नहीं थीं क्योंकि बिना स्त्री के भक्त हुए घर-परिवार में भक्ति नहीं आती है । घर में यदि स्त्री भक्त है तो उस घर के सदस्य उसके हाथ का बना हुआ भोजन खाते हैं और इस तरह सारा परिवार ही भक्त बन जाता है । स्त्री भक्त है और पति यदि नास्तिक है तब भी वह पत्नी की भक्ति के प्रभाव से भक्त बन जाएगा । इसका प्रमाण है श्रीमद्भागवत के अनुसार यज्ञपत्नियों की भक्ति के प्रभाव से उनके पति मथुरा के याज्ञिक चतुर्वेदी ब्राह्मण भक्त बन गये । अपनी पत्नियों की भक्ति को देखकर उन्होंने कहा – **अहो वयं धन्यतमा येषां नस्तादृशीः स्त्रियः ।**

भक्त्या यासां मतिर्जाता अस्माकं निश्चला हरौ ॥ (श्रीभागवतजी १०/२३/४९)

हम लोग बड़े ही बडभागी हैं कि हमें ऐसी भक्त स्त्रियाँ मिलीं कि इनकी भक्ति के प्रभाव से हम लोगों में भी भक्ति आ गयी है । इसलिए यदि किसी घर में कोई स्त्री सही ढंग से भक्त है तो वह परिवार के सदस्यों को भोजन कराएगी, पानी पिलाएगी, उसके प्रभाव से उस घर में भोजन करने वाले परिवार के सभी सदस्य भक्त बन जायेंगे क्योंकि वह भक्त है, वह भोजन बनाकर भगवान् को भोग लगाएगी, भगवान् को बुलाएगी, उसका भगवान् में प्रेम है ।

रैदासजी की पत्नी प्रभुताजी भी ऐसी ही थीं । रैदासजी को तो सारी दुनिया जानती है किन्तु उनकी पत्नी को बहुत कम लोग जानते हैं । प्रभुताजी बहुत बड़ी भक्त थीं । वह इतनी बड़ी भक्त थीं कि रैदासजी का सारा भार उन्हीं के ऊपर था । एक अच्छी स्त्री पति का सारा भार अपने ऊपर ले लेती है और एक मूर्ख स्त्री व्यर्थ के खर्च बढ़ाकर, अपने श्रृंगार के साधनों को खरीदकर, उसी में लगे रहने से बोझ बन जाती है । ऐसा देखा गया है कि पति से उसका खर्च पूरा नहीं पड़ता है क्योंकि वह अपने पति से कहती है कि मेरे लिए गहने लाओ, बढ़िया वस्त्र लाओ, सजने-सँवरने के उपकरण लाओ । प्रभुताजी तो एक सच्ची स्त्री थीं । वह रैदासजी के सारे कामों को करती थीं । उनके घर में प्रायः सन्त आते रहते थे तो वे उनको भोजन कराया करती थीं । रैदासजी के घर में सन्त बहुत आया करते थे । जो सन्त कच्चा सामान लेता था, उसको रैदासजी कच्चा सामान देते थे तो फिर वह अपना भोजन स्वयं बनाता था । अधिकतर भक्त तो प्रभुताजी के हाथ का बना हुआ भोजन करते थे क्योंकि जो सच्चा भक्त होता है, वह भक्त के हाथ से बना हुआ भोजन ही खाता है, वह भक्तों की जाति को नहीं देखता है । भक्त किसी भी जाति में है, वह सदा पवित्र है । **"जाति पाँति पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि को होई ।"** नामदेवजी जाति के छीपी थे । कबीरदासजी जुलाहा थे । इसी प्रकार रैदासजी चर्मकार थे । कृष्णकालीन वाल्मीकि जी श्वपच (चाण्डाल) थे । चाण्डाल होने पर भी वे सबसे बड़े माने गये । जिन वाल्मीकि जी ने संस्कृत में रामायण की रचना की, वे भी पहले बहुत ही अशुभ कर्म किया करते थे । राम नाम के उल्टा जप मरा-मरा करने से ही वे सिद्ध बन गये । इस तरह भक्तों की कोई जाति नहीं होती है लेकिन भक्ति होनी चाहिए । महात्मा लोग कहते हैं कि जिसमें भक्ति नहीं है तो वह बामन (ब्राह्मण) भी रावण है । रावण भी ब्राह्मण था । **"अभयराम ये हू बडभागी, ये बामन हैं कि रावण ।"** भक्ति के बिना तो ब्राह्मण भी रावण है ।

एकबार रैदासजी के यहाँ बहुत से महात्मा आये । रैदासजी ने अपनी पत्नी से कहा – 'प्रभुता ! बहुत से सन्त आ गये हैं । इनको भोजन कराने के लिए घर में कुछ है कि नहीं ?' प्रभुताजी सोचने लगीं कि मेरे पतिदेव सन्तों को भोजन कराने की चिन्ता कर रहे हैं । इतने अधिक सन्त आ गये हैं किन्तु घर में इनको खिलाने के लिए कुछ नहीं है । अब मैं क्या करूँ ? पति की इच्छा पूरी करना जरूरी है । प्रभुता जी ने कहा – 'नाथ ! घर में तो कुछ भी नहीं है लेकिन प्रभु आपकी इच्छा अवश्य ही पूरी करेंगे । मैं कुछ प्रबन्ध करती हूँ ।' रैदास जी ने पूछा कि तुम प्रबन्ध कहाँ से करोगी ? हमको उधार तो कोई देगा नहीं क्योंकि सभी को हमारी स्थिति का ज्ञान है और वैसे भी पहले से ही हमारे ऊपर बहुत कर्ज है । सभी जानते हैं कि इनके घर में साधु-सन्त आते हैं और भोजन करते हैं । दुनिया के लोग इसे फ़ालतू का खर्च समझते हैं । ऐसी स्थिति में तुम प्रबन्ध कैसे करोगी ? प्रभुताजी बोलीं – 'मैं अभी आती हूँ । अभी कुछ लाती हूँ और अभी सब प्रबन्ध कर दूँगी ।' ऐसा कहकर प्रभुताजी अपनी सास के पास गयीं । उनकी सास बड़ी धनी थी । रैदासजी के माता-पिता अर्थात् प्रभुता के सास-ससुर ने रैदास और प्रभुता को घर से अलग कर दिया था क्योंक इनके घर में साधु-सन्त बहुत आते थे, उनको खिलाने में धन बहुत खर्च होता था । इसलिए रैदासजी के माता-पिता ने इनको घर से बिलकुल निकाल ही दिया था और ये लोग अलग झोंपड़ी में रहते थे । रैदासजी की माँ के पास धन बहुत अधिक था । प्रभुताजी दौड़कर अपनी सास के पास गयीं । उनके चरण स्पर्श किये । सास ने पूछा – 'प्रभुता ! आज कैसे यहाँ आई है ?' प्रभुताजी ने झूठ बोल दिया कि आज मेरे पीहर में किसी का विवाह है । मैं विवाह में जा रही हूँ । किसी के विवाह में जाते हैं तो इसके लिए बढ़िया वस्त्र की आवश्यकता होती है । स्त्रियों के पास यदि आभूषण नहीं होते हैं तो अपने पड़ोस में किसी स्त्री से माँगकर आभूषण पहनकर जाती हैं । इसीलिए प्रभुता जी ने झूठे ही अपनी सास से कहा कि मैं अपने भतीजे के विवाह में जा रही हूँ । मैं भले ही गरीब हूँ किन्तु आपकी ही बहू हूँ । यदि आप चाहें तो मैं कुछ आभूषण पहनकर चली जाऊँ और फिर वापस आने पर आपके आभूषण दे दूँगी । सास ने कहा – 'अरे हाँ ! अवश्य ही मेरे आभूषण पहनकर जा क्योंकि रिश्तेदारी में आभूषण पहनकर नहीं जाएगी तो मेरी नाक कटेगी क्योंकि तू बहू तो मेरी ही है किन्तु घर आने पर मेरे आभूषण तुरन्त ही लौटा देना । मुझे तेरे ऊपर भरोसा बिलकुल भी नहीं है । तेरे घर में तो प्रतिदिन ही साधु-सन्त घुसे रहते हैं । तू उन्हें खिला-पिलाकर सारा पैसा बर्बाद कर देती है । मैं तुझे पहनने के लिए अपना सोने का हमेल देती हूँ । इसको पहनकर अपने पीहर में जाना और वहाँ से आकर जल्दी से मुझे दे देना ।' प्रभुता जी बोलीं – 'आप चिन्ता न करें । मैं आपका यह हमेल पहनकर अपने पीहर में जाती हूँ और वहाँ से लौटने पर आपको इसे वापस कर दूँगी ।' सास बोली – 'ठीक है, हमेल ले जा किन्तु अपने पीहर से लौटते ही तुरन्त इसे मुझे वापस कर देना ।' प्रभुता जी हमेल लेकर सीधे अपने घर आयीं और रैदासजी से बोलीं – 'इसे लीजिये और दुकान पर गिरवी रख आइये तथा बदले में आटा, चावल, घी, बूरा, दाल और सब्जी खरीद ले आइये ।' रैदासजी ने पूछा – 'यह सोने का हमेल तुम कहाँ से माँगकर लायी हो ?' प्रभुता जी अपने पति से तो झूठ नहीं बोल सकती थीं इसलिए उन्होंने कहा – 'अपनी सास अर्थात् आपकी माताजी से माँगकर लायी हूँ ।' रैदासजी ने पूछा – 'उन्होंने अपना सोने का हमेल तुमको कैसे दे दिया ? मेरी माँ तो सोचती है कि मैं साधु-सेवा में व्यर्थ का धन खर्च करता हूँ ।' प्रभुताजी बोलीं – 'मैंने उनसे कहा था कि मेरे पीहर में मेरे भतीजे का विवाह है और मुझे वहाँ जाना है । यदि मैं विवाह में बिना आभूषण पहने ही चली जाऊँगी तो इससे तो आपकी ही नाक कटेगी क्योंकि मैं आपकी बहू हूँ । इसलिए माताजी ने मुझे विवाह में जाने के लिए यह हमेल दे दिया है ।' रैदासजी बोले – 'अच्छा-अच्छा ! तुमने बहुत बढ़िया किया ।' रैदासजी प्रभुता जी से वह हमेल लेकर बाजार में गये और दुकान में गिरवी रखकर सन्तों को खिलाने के लिए बहुत सा सामान लेकर घर आये । प्रभुता जी ने सन्तों के लिए भोजन बनाया और फिर तो सन्तों की बहुत बढ़िया पंगत हुई । पंगत से पहले बहुत जोर के साथ भगवान् की जय-जयकार का उद्घोष किया गया । पड़ोस में ही रैदासजी के माता-पिता का घर था । जोरदार जयकारे की ध्वनि सुनकर माता ने सोचा कि यह क्या रहस्य है ? आज मेरे बेटे के घर में बड़े जोर की साधुओं की पंगत हो रही है । इसमें कोई चाल तो नहीं है ? बहू मेरा सोने का हमेल माँगकर ले गयी है । कहीं ऐसा तो नहीं कि उसी ने हमेल बेचकर यह साधुओं की पंगत की हो । चलो, संध्या होने तक देखती हूँ कि वह क्या

करती है ? जब साधुओं की पंगत हो गयी और शाम तक अपने वचन के अनुसार प्रभुताजी अपनी सास के पास उसका दिया हुआ हमेल वापस करने नहीं पहुँचीं तो सास क्रोधित होकर उनके घर गयी और रैदासजी से बोली – 'क्यों रे ? तेरी घर वाली कहाँ है ?' रैदासजी सब बात जानते थे कि मामला गड़बड़ है, फिर भी वे बोले – 'माताजी ! मुझे पता नहीं प्रभुता कहाँ है ? तुम ही देख लो ।' अब तो रैदासजी की माँ घर के भीतर घुस गयी तो देखा कि प्रभुता जी भीतर बैठी थीं और सन्तों के जाने के बाद उनका बचा हुआ प्रसाद पा रही थीं । उन्हें देखकर उनका हाथ पकड़कर रैदास की माँ बोली – 'क्यों तू विवाह में गयी थी ? ये विवाह हो रहा है ? यहाँ क्या हो रहा है ? मेरा हमेल कहाँ है, लाकर मुझे दे ।' प्रभुताजी चुप रहीं, कुछ बोल नहीं सकीं तो उनकी सास बोली – 'मैं सब समझ गयी । तूने मोड़ाओं को खिलाने के लिए बदमाशों के पास मेरी सोने की हमेल गिरवी रख दी है और घर में आकर लड्डू-पूड़ी खा रही है । आज तेरे सब लड्डू-पूड़ी निकालूँगी, चल मेरे साथ ।' ऐसा कहकर प्रभुता जी की सास उनका हाथ पकड़कर उन्हें अपने घर ले गयी । उसका पति भी उसी की तरह कंजूस था । वह अपनी पत्नी से बोला – 'अरी ! क्या हुआ ?' सास बोली – 'हुआ क्या ? इस प्रभुता को पकड़कर लायी हूँ । इसने और रैदास ने मेरा सोने का हमेल बाजार में गिरवी रख दिया और मोड़ाओं को पंगत करा रहे थे । आज इसको मैं सुधार दूँगी, जनम भर के लिए सुधार दूँगी । मोड़ाओं को खिलाने की इन दोनों की आदत सदा के लिए छूट जायेगी ।' ऐसा कहकर सास प्रभुता जी का हाथ पकड़कर उन्हें घर के भीतर अँधेरी कोठरी में ले गयी और वहाँ उनके हाथ-पैर रस्सी से बाँधकर कोठरी के दरवाजे में ताला लगा दिया और कठोरता के साथ बोली – 'अब यहीं तू मर । जब तक मेरी हमेल मुझे वापस नहीं मिलेगी, तब तक इसी अँधेरी कोठरी में सड़-सड़कर तू मर जा । न तो इस कोठरी का मैं दरवाजा खोलूँगी न तेरे हाथ-पाँव खोलूँगी और न ही तुझे रोटी-पानी दूँगी । तुम दोनों ने मेरा सब घर लूट खाया । हम लोग कितने पैसे वाले थे, तुम बहू-बेटा ने मिलकर हमारा सब पैसा बर्बाद कर दिया । ऐसा ही मेरा बेटा था और वैसी ही उसे तू आकर मिल गयी । रोज मैं देखती हूँ कि तेरे घर में मोड़ा आकर माल घोटते हैं और उनकी जयकार बोली जाती है ।' ऐसा कहकर सास कोठरी के बाहर चली गयी । अब उस अँधेरी कोठरी में बेचारी प्रभुता जी भगवान् को पुकारने लगीं – **'दीनों के स्वामी आओ, आओ स्वामी आओ, प्रभुता के स्वामी आओ, इस अंध कोठरी में मैं टेरूँ ।'** भगवान् को बुलाना चाहिए । भगवान् आते हैं । गोऽऽऽपाऽऽऽल ! अपने घरों में सब लोग भगवान् को बुलाया करो, वे आते हैं, निश्चय ही आते हैं । हमारी राधारानी ब्रजयात्रा में जब-जब मुसीबत आई है, हमने गोपाल नाम की टेर लगायी और इतने से ही सब संकट टल गये, सभी काम सिद्ध हो गये । **'अंध कोठरी में मैं टेरूँ'** प्रभुताजी अँधेरी गुफा में बन्द हैं और प्रभु को बुला रही हैं । अँधेरे में कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा है ।**'दिखता नहीं कहाँ मैं हेरूँ, दीनों के स्वामी आओ ।'** प्रभुताजी की सास ने उनके हाथ-पाँव मजबूती के साथ रस्सी से बाँध दिए थे । इसलिए वे कहती हैं – **'हाथ-पाँव मेरे बाँधे हैं'** सेवा भी नहीं कर सकते हैं । हे गोविन्द ! मैं कोई काम नहीं कर सकती ।**'तुम मुझे छुड़ाने आओ, आओ रे स्वामी आओ, राधे ! राधे !! राधे !!!'** हे नाथ ! इसी प्रकार एक बार हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को अँधेरी गुफा में बन्द कर दिया था । उसने सोचा कि यह इसमें दम घुटने पर मर जाएगा किन्तु तुमने वहाँ प्रह्लाद की रक्षा की । **'प्रह्लाद एक बालक था, उसको भी बन्द किया था । वह भीषण गुफा थी गहरी, बाहर राक्षस थे प्रहरी ।'** बड़ी गहरी अँधेरी गुफा थी । हे नाथ ! आपने उस अँधेरी गुफा में प्रह्लाद की रक्षा की थी । **'तुम मुझे बचाने आओ, दीनों के स्वामी आओ ।'** सच्ची पुकार कभी खाली नहीं जाती है । ठाकुरजी ने रैदासजी का रूप बनाया और सोने का हमेल लेकर रैदास जी की माँ के घर पहुँचे । इधर रैदासजी को कुछ पता नहीं कि ठाकुरजी क्या लीला कर रहे हैं ? उनको तो केवल इतना ही पता था कि मेरी माँ प्रभुता को पकड़कर ले गयी है, वहाँ पता नहीं कैसा दण्ड देगी ? रैदास बने ठाकुरजी उनकी माँ के घर पहुँचे और पुकारने लगे – 'माता ! ओ माता !' रैदासजी की माता भीतर थी, उसने सोचा कि शायद रैदास बोल रहा है । वह भीतर से ही बोली – 'क्या है ?' ठाकुरजी बोले – 'माता ! तुम्हारी हमेल लाया हूँ ।' माँ बोली – 'अरे ! हमेल लाया है । हाँ बेटा ! तू तो बड़ा लायक है । तेरी बहू बड़ी नालायक है लेकिन चलो बेटे में अकल आ गयी है ।' ऐसा कहते हुए माँ नकली रैदासजी के पास आई तो देखा कि उसका ही हमेल था । अपना सोने का हमेल देखकर रैदासजी की माँ बड़ी प्रसन्न हो गयी और बोली – 'बेटा ! बैठ जा, भोजन कर

ले ।' ठाकुरजी बोले – 'नहीं माँ, मैं तो भोजन करके आया हूँ । मैं तो तुम्हारा हमेल तुम्हें देने आया था । इसे लो ।' ठाकुरजी जी ने देखा कि माँ ने हमेल तो लेकर रख लिया किन्तु प्रभुता को नहीं छोड़ रही है । बड़ी कट्टर सास है । इसलिए वे बोले – 'माँ ! अभी मुझे घर में ठाकुरजी की सेवा करना बाकी है । सन्त लोग भोजन कर गये हैं तो बहुत से बर्तन जूठे पड़े हैं, उन्हें साफ़ करना है । मैं तो बर्तन नहीं साफ़ कर पाऊँगा ।' माँ बोली – 'अरे हाँ, चलो, अब प्रभुता को मैं छोड़ देती हूँ । तू हमेल लेकर आया है तो छोड़ देती हूँ, नहीं तो वह छोड़ने लायक तो नहीं है, बड़ी नालायक है ।' ऐसा कहकर वह अँधेरी कोठरी में गयी । ताला खोलकर प्रभुता के रस्सी से बंधे हाथ-पाँवों को खोला और उनसे कठोरतापूर्वक बोली – 'चल, अब दुबारा ऐसी हरकत मत करना, नहीं तो तेरी खोपड़ी फोड़ दूँगी । आज तुझे छोड़े देती हूँ । मेरा बेटा तो नालायक था लेकिन आज सुधर गया है । मेरा हमेल वह वापस करने आया है किन्तु तू नहीं सुधरी ।' ऐसा कहकर सास ने प्रभुता जी को कोठरी से बाहर निकाल दिया । चलते-चलते प्रभुताजी को उसने एक डंडा भी लगा दिया परन्तु प्रभुताजी को कोठरी से बाहर निकलने पर प्रसन्नता हुई । उन्होंने सोचा कि चलो, अच्छा हुआ कि मैं कोठरी से बाहर आ गयी, नहीं तो इसी में पड़ी-पड़ी मैं कष्ट पाती रहती । प्रभुताजी ने अपनी सास से कहा – 'माताजी ! आपने बड़ी दया की, जो मुझे छोड़ दिया ।' उनको नहीं पता था कि मेरी सास की हमेल इनको वापस मिल गयी है । वे तो सोच रहीं थीं कि चलो, एक डंडे में ही मुझे इस अँधेरी गुफ़ा से छुट्टी मिल गयी । सास बोली – 'देख, मेरा बेटा रैदास हमेल लाकर मुझे दे गया है । इसीलिए मैं तुझे छोड़ रही हूँ । यदि न लाता तो मैं तुझे अवश्य ही मार डालती ।' प्रभुता जी ने आश्चर्य से पूछा – 'हमेल कौन लाया ?' सास बोली – 'मेरा बेटा रैदास लाया, और कौन लाता ? क्या तू लाती ? हमेल लेकर तेरी तो नीयत ख़राब हो गयी थी । तूने उसे रख लिया और वापस करने नहीं आई ।' प्रभुता जी सोचने लगीं कि मेरे पति गिरवी रखा हुआ सोने का हमेल कैसे छुड़ा सकते हैं । उनके पास तो कोई पैसा भी नहीं है । उन्होंने सास से पूछा – 'स्वामी कहाँ हैं ?' सास बोली – 'अरे, वह बर्तन साफ़ करने घर गया है । अब तू भी जा और घर का काम कर ।' प्रभुता जी जल्दी से अपने घर पहुँचीं । वहाँ उन्होंने देखा कि रैदासजी तो कीर्तन कर रहे थे । प्रभुता जी सोचने लगीं कि ये तो कीर्तन कर रहे हैं । ये कब बाजार गये होंगे हमेल छुड़ाने ? वह आश्चर्यचकित होकर रैदास जी के पास गयीं और उनके चरण स्पर्श किये । रैदासजी अपनी धर्मपत्नी को देखकर बोले – 'अरी प्रभुता ! तुम आ गयी ।' प्रभुता बोलीं – 'हाँ, आप माताजी को हमेल वापस कर आये तो उन्होंने मुझे छोड़ दिया ।' रैदासजी को बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्होंने कहा – 'अरे, मैंने कब माताजी को हमेल लाकर दिया ।' प्रभुता – 'क्यों ? माताजी तो कह रही थीं कि आप ही हमेल वापस करने उनके घर गये थे ।' रैदासजी – 'अरे, मैं वहाँ कैसे जाता ? मैं तो ठाकुरजी के पास बैठकर उनका कीर्तन कर रहा था और मेरे पास पैसे कहाँ हैं जो मैं हमेल को छुड़ाकर लाता ? मैं तो अपने घर से कहीं गया भी नहीं ।' प्रभुता – 'आप कहीं गये नहीं और हमेल बाजार से छूटकर माताजी को वापस मिल गया, ऐसा कैसे हो सकता है ? यही आश्चर्य तो मुझे भी हो रहा था कि आपके पास पैसा-धेला है नहीं तो फिर बाजार से हमेल कैसे छुड़ा सकते हैं ?' घर में कुछ साधु-सन्त भी बैठे थे । उन्होंने भी कहा – 'रैदासजी तो यहीं हमारे साथ बैठकर भगवान् का कीर्तन कर रहे हैं । ये तो यहाँ से कहीं और गये ही नहीं ।' रैदासजी भी कहने लगे कि मैं तो यहाँ से कहीं गया नहीं फिर हमेल बाजार से छूटकर माताजी के पास कैसे पहुँच गया ? मैं इसका पता लगाता हूँ । रैदासजी तुरन्त ही कुछ सन्तों को लेकर बनिया की दुकान पहुँचे, जहाँ उनकी हमेल गिरवी रखी हुई थी । जैसे ही रैदासजी बनिया की दुकान पर पहुँचे, उनको देखते ही बनिया अपने आप ही कहने लगा – 'अरे रैदास ! लोग झूठे ही तुम्हारी बुराई किया करते हैं । देखो, तुमने तो ब्याज सहित सारा पैसा वापस कर दिया । तुम तो बहुत ईमानदार आदमी हो ।' रैदासजी ने पूछा – 'अरे, मैंने सारा पैसा वापस कर दिया ।' बनिया बोला – 'और क्या ? तुम मेरी दुकान पर आये तो थे । ये देखो, मेरे पास इसका सारा हिसाब है और तुमने तो ब्याज से अधिक पैसा दिया ।' रैदासजी बड़े ही आश्चर्य से पूछने लगे – 'अरे, मैं यहाँ आया ?' बनिया बोला – 'हाँ-हाँ ! तुम्हीं तो आये थे लेकिन अब इस तरह क्यों पूछ रहे हो ?' रैदासजी बोले – 'सेठ जी ! मैं तो तुम्हारी दुकान पर नहीं आया था । देखो, इस बात के साक्षी ये साधु-सन्त हैं । इनसे पूछ लो । मैं तो इनके साथ अपने घर में भगवान् का कीर्तन कर रहा था ।' बनिया बोला – 'अरे, तुम्हीं तो दुकान पर

आये थे, सारा पैसा दे गये थे । ये देखो हिसाब में सब लिखा है ।' रैदासजी समझ गये कि वस्तुतः भगवान् ही मेरा रूप बनाकर आये और हमेल छुड़ाकर ले गये और सारा पैसा चुका दिया । मेरी माँ ने प्रभुता को काल-कोठरी के भीतर हाथ-पाँव बांधकर बन्द कर दिया था । उस समय वह रो रही थी और प्रभु को पुकार रही थी । उसकी पुकार सुनकर करुणामय प्रभु मेरा रूप बनाकर आये और बनिया की दुकान पर सारा पैसा देकर हमेल छुड़ा लाये तथा घर जाकर मेरी माँ को वापस कर दिया । इस तरह उन्होंने प्रभुता को बन्धन से मुक्त करवाया और हमारे ऊपर कितनी बड़ी कृपा की ।

इस कथा से यह शिक्षा मिलती है कि यदि मनुष्य सच्चाई के साथ भगवान् के रास्ते पर चलता है तो निश्चय ही आज भी भगवान् आते हैं और उस पर अपार कृपा की वर्षा करते हैं । उसके योगक्षेम का वहन करते हैं । मैं अपने पास कोई पैसा नहीं रखता हूँ । हमारे मन्दिर से प्रति वर्ष ब्रज चौरासी कोस की चालीस दिन की यात्रा चलती है । उसमें लगभग १५-२० हज़ार लोग सम्मिलित होते हैं और किसी से एक भी पैसा नहीं लिया जाता । चालीस दिनों तक खाने-रहने, दवाओं आदि की सभी सुविधा पूर्णतया निःशुल्क होती है । ये सब कैसे सम्भव होता है ? इसका कारण यही है कि उस यात्रा में चौबीस घंटे भगवन्नाम का कीर्तन चलता रहता है और उस अखण्ड कीर्तन के प्रभाव से ही सारा खर्च बिना किसी से माँगे ही पूरा पड़ता है । इसलिए सभी लोग भगवान् के कीर्तन की महिमा को समझो और अपने घर में प्रतिदिन कीर्तन करने का नियम बना लो । बिना भगवान् का नाम लिए कभी पानी भी मत पियो । **(बाबाश्री के सत्संग '८/६/२०१०' से संकलित)**

श्रीसंत-संग का अमोघ प्रभाव

भक्तिमती 'श्रीरमा माताजी' (बाबाश्री की सत्संगाराधननिष्ठ सुमधुर भजन-गायिका) द्वारा कथित भावोद्गार

(७/७/२०२४)

प्रश्न – श्रीबाबा महाराज के साथ आप लोगों की भेंट किस प्रकार हुई ?

रमाजी – सबसे पहले मेरे नानाजी श्रीबाबा के सम्पर्क में आये । नानाजी पहले ब्रज में आते थे और राधाकुण्ड पर अधिक दिनों तक वास करते थे । उस समय के अधिकतर सभी सन्त-महापुरुषों का उन्होंने संग किया था । वे अपनी पुत्रियों को भी सन्तों के संग का लाभ उठाने के लिए ले जाया करते थे । उन्होंने डेढ़ साल तक राधाकुण्ड पर अज्ञातवास किया था । एक बार वे राधाकुण्ड से बरसाना आये और यहाँ गह्वरवन में बैठकर उन्होंने श्रीमद्भागवत का पारायण किया । यहाँ रहते हुए उनको पता चला कि गह्वरवन में एक साधु आये हुए हैं और वे बड़ा अच्छा सत्संग करते हैं । उस समय यहाँ कुछ ऐसे ब्रजवासी भी थे, जो बाबा के प्रति बहुत भाव रखते थे, उनके मुख से श्रीबाबा की प्रशंसा सुनकर नानाजी श्रीबाबा के पास आये । नानाजी की उस समय परिपक्व अवस्था हो चुकी थी किन्तु श्रीबाबा की तब युवावस्था थी । जब नानाजी ने बाबा महाराज का सत्संग सुना तो उनको इतना अधिक आनन्द हुआ कि उन्होंने उसी समय निश्चय कर लिया कि अब तो अपने पूरे परिवार को लेकर मैं यहाँ बाबा के पास आऊँगा क्योंकि नानाजी ने अपने परिवार में सबको सत्संग करना, भगवान् की आराधना करना, भगवान् से प्रेम करना – यही भेंट दी । अपने बच्चों, अपनी बहनों, अपने परिवार में सारी सन्तति के लिए उनका यही संकल्प था कि सभी अध्यात्म के मार्ग पर चलें । गोपालजी, जो नानाजी के घर में अभी हैं, वे डेढ़ सौ साल से हैं । नानाजी की माँ भी उन्हीं गोपालजी की पूजा करती थीं । उस पूजा को नानाजी ने, उनकी बहनों ने, बेटियों ने बढ़ाया । उन्होंने ठाकुरजी से प्रेम करके अपना सम्बन्ध बनाया । गोपालजी नाना-नानी के तो बेटे थे और उनकी बेटियों के वे भाई बने और हमारे वे मामा बने । नानाजी घर में सदा सबको सत्संग कराते, भजन-कीर्तन-पाठ करवाते थे । अपने बच्चों को साथ लेकर ये सब कराते थे, ऐसा नहीं कि अकेले करें । घर में सबको बैठाकर वे कथा सुनाया करते थे । सारे परिवार को

कभी रामचरितमानस का पाठ करवाते, कभी विष्णुसहस्रनाम का पाठ, कभी गोपालसहस्रनाम का पाठ, कभी गजेन्द्र मोक्ष तो कभी राधाकृपाकटाक्ष का पाठ करवाते, उसमें छोटे-से छोटा बच्चा भी बैठता, बड़े से बड़ा व्यक्ति भी बैठता । वे सभी को तीर्थयात्रा के लिए भी ले जाते थे । अपने परिवार वालों को कभी अयोध्या, कभी चित्रकूट लेकर गये, जब राधाकुण्ड आये तो सबको यहाँ भी लाये । परिवार के लगभग ३५ से ५० लोगों को उन्होंने गिरिराजजी की परिक्रमा भी करवाई । इसके कुछ समय पहले उनको श्रीबाबामहाराज के दर्शन भी हो गये थे तो फिर सारे परिवार को लेकर बाबा का दर्शन करने के लिए बरसाना आये । परिवार के सभी सदस्यों को बाबामहाराज का दर्शन करवाया । परिवार के अधिकतर सदस्यों में कोई कलकत्ता में रहता था तो कोई बीकानेर में, ये सभी बाबा का दर्शन करके अपने स्थानों को चले गये । सन् १९७९ में नानाजी ने फिर से अपने परिवार के सदस्यों को बुलाया और मुझे भी साथ लेकर बाबा का दर्शन करने के लिए मान मन्दिर गये । उस समय मान मन्दिर में आजकल की तरह सीढ़ियाँ नहीं थीं, पत्थरों का ही रास्ता था, उसके द्वारा चढ़कर हम लोग बाबा महाराज के पास पहुँचे । मान मन्दिर के पुराने मन्दिर के ठीक ऊपर एक कुटिया थी, उसमें श्रीबाबा महाराज रहते थे, उसमें उनका एक तानपुरा भी रखा था । उस समय नानाजी ने बाबा से कहा कि ये मेरे परिवार की बच्ची आपको युगल परिहार स्तोत्र सुनाएगी । उनका अभिप्राय था कि इसी बहाने इसको बाबा महाराज की कृपा मिलेगी । मैं उस समय गाया करती थी । श्रीचैतन्य महाप्रभु जी का ही संकलन था, मैंने उसे श्रीबाबा को सुनाया । उसे सुनकर बाबा बहुत प्रसन्न हुए । मेरी अवस्था उस समय १८ वर्ष थी और अध्यापन के कोर्स के लिए मेरी पढ़ाई चल रही थी । कलकत्ते से जब भी सुविधा होती थी तो वहाँ से श्रीबाबा के दर्शन के लिए प्रायः आया करती थी । नानाजी की तो यही इच्छा थी कि हम लोग कहीं और न जाकर सपरिवार यहीं बरसाना में ही आयें । बरसाने में हम लोगों के एक पंडा जी हैं, उनके स्थान पर नानाजी ने हम लोगों के रुकने के लिए एक कमरा बनवा दिया था । साल में एक-दो बार हम सभी लोगों को नानाजी वहाँ बुलवाते थे । जब भी हमारे परिवार के लोग आते तो नानाजी मुझे विशेषकर बाबा महाराज के पास लेकर जाते थे और मुझसे कहते थे कि बाबा को कुछ भजन सुनाओ । श्रीबाबा भी कहते थे कि हाँ, कुछ भजन सुनाओ । बाबा के कहने पर मैं भजन गाकर सुनाती थी । बाबा ने मुझसे कहा कि देखो, तुम यहाँ मान मन्दिर में गाती हो तो तुम्हारी आवाज श्रीजी मन्दिर तक जाती है । (उस समय माइक तो होते नहीं थे । मान मन्दिर में बिजली का भी प्रबन्ध नहीं था) । श्रीगह्वरवन में वर्तमानकाल में जो रसकुञ्ज है, वहाँ बाबा की पुरानी कुटी या छोटा-सा सत्संग भवन था । वहाँ उस समय केवल ब्रज रज ही थी । वहाँ एक तख़्त पर बाबा बैठते थे । उनके आसपास नीचे सत्संग सुनने के लिए ब्रजवासी बैठा करते थे । जब मैंने उस कुटी में पहली बार बाबा का सत्संग सुना तो वे श्रीमद्भागवत के वेणु गीत की कथा सुना रहे थे । नानाजी कहा करते थे कि कि श्रीबाबा महाराज जैसा गहन सत्संग अन्यत्र कहीं नहीं है, अत्यन्त ही दुर्लभ है । इसलिए उन्होंने हम लोगों से कह दिया था कि अब तुम लोगों को कहीं भी जाने की जरूरत नहीं है । कहीं भी जाना है तो केवल बरसाना जाओ और वहीं श्रीबाबा महाराज का सत्संग, उनका ही कथा-कीर्तन सुनो । मैं तुम लोगों को, अपने सारे परिवार को इनके सुपुर्द करता हूँ । जब भी मैं नानाजी के साथ यहाँ आती तो वे मुझसे कहते थे कि बाबा को कीर्तन गाकर सुनाओ तो मैं गाती थी । श्रीबाबा बहुत प्रसन्न होते थे और मुझे उनका बहुत स्नेह प्राप्त हुआ ।

प्रश्न – उन दिनों जब बाबा सत्संग देते थे तो क्या माइक का प्रबन्ध नहीं था ?

रमाजी – जिस समय मैंने पहली बार श्रीबाबा का सत्संग सुना, उन्होंने वेणु गीत की व्याख्या की थी । उस समय यहाँ माइक की कोई व्यवस्था नहीं थी । वह सत्संग कमरे के भीतर होता था । बाद में जब कुटी में कमरे के बाहर सत्संग होने लगा, तब माइक की व्यवस्था हो गयी थी । इसके पहले कुटी में एक कमरा जैसा था, जिसमें बाबा की माताजी रहती थीं, उसमें श्रीबाबा सत्संग देते थे । उस सत्संग में लगभग पाँच से दस ब्रजवासी आते थे । इसके बाद श्रीबाबा उसी कुटी में

कमरे के बाहर सत्संग देने लगे तो उनका वही तख़्त बाहर लगा दिया गया । तब ऐसा साधन बन गया था कि अधिक लोग वहाँ बैठ सकते थे । वहाँ ब्रज रज के ऊपर टाट की बोरियाँ बिछायी जाती थीं । उसी पर सब लोग बैठकर श्रीबाबा महाराज की कथा और कीर्तन सुना करते थे । शाम को चार बजे ब्रजवासी आ जाते थे तो फिर बाबा का सत्संग आरम्भ होता था । हमारे नाना-नानी बरसाना से रिक्शे पर बैठकर उस सत्संग में आते थे । कभी-कभी हम लोग भी आते थे तो मुझे भी बाबा के सामने गाने का अवसर मिलता था क्योंकि श्रीबाबा का मुझ पर इतना स्नेह था, इतनी कृपा थी कि वे मुझसे सबसे आगे बिठाते थे तो उस समय भजन गाने का अवसर मिल जाता था । उस समय सत्संग होने के बाद फिर कीर्तन हुआ करता था । उसी समय के दौरान बाबा मुझसे कहते कि कुछ भजन सुनाओ तो उस समय भजन गाकर सुनाती थी । उस अवसर पर मुझे तो श्रीबाबा का बहुत प्यार मिला । सबसे पहले बाबा ने मुझे बेटी कहा था । उन्होंने कहा कि ये मेरी बेटी है । मैंने सोचा कि देखो, जब सन्त मेरे पिता हैं तो फिर मुझे किसी बात का भय नहीं है । नानाजी ने अपने निधन से पहले मेरे नाम से एक पत्र लिखा था । जब उसे खोला गया तो उन्होंने लिखा था कि बाबा को छोड़कर कहीं मत जाना । मैंने अपने सारे जीवन का मन्थन करके जो कुछ भी मक्खन निकाला है, वह बाबा महाराज ही हैं । इनकी शरण में ही तुम सबको रहना है । उस पत्र को पढ़कर हमारे सारे परिवार में एक विश्राम आ गया कि बस, अब कहीं और नहीं जाना है और केवल बाबा महाराज की ही शरण में रहना है । नानाजी की अब पाँचवीं पीढ़ी श्रीबाबा के सानिध्य में है । मैंने तो अपने जीवन में श्रीबाबा महाराज को छोड़कर अन्य किसी सन्त की वाणी भी नहीं सुनी है । मैं पहले किसी सन्त के पास जाती थी तो वहाँ भजन ही गाती थी । केवल भजन गाती थी और सोचती थी कि बस, इतना ही पर्याप्त है । वैसे नानाजी हम लोगों को कई सन्तों के दर्शन के लिए ले जाते थे । वे हम लोगों को गीता वाटिका, गोरखपुर भी ले जा चुके थे, जहाँ हम लोगों ने श्रीराधा बाबा के भी दर्शन किये थे । भाईजी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दारजी भी नानाजी के घर में आ चुके थे । इस तरह नानाजी का तो सारा जीवन ही सन्तों के प्रति समर्पित रहा लेकिन उन्होंने हम सब लोगों के लिए आश्रय के रूप में गह्वर वन का चयन किया कि यहाँ श्री बाबा महाराज की शरण में रहो । इस प्रकार उन्होंने अपने सारे परिवार के सदस्यों को, हम सभी को श्रीबाबा महाराज की शरणागति दिलवायी ।

मेरे अपने जीवन की घटना है कि पहले मेरे विवाह का कोई प्रसंग नहीं था, फिर कुछ कारणवश ऐसा हो गया कि मेरे माता-पिता को विवश होकर मेरा विवाह करवाना पड़ा । उस समय नानाजी यहीं बाबा महाराज के पास थे । उन्होंने रोते हुए कहा कि मैं नहीं चाहता कि उसका विवाह हो लेकिन अब किया क्या जा सकता था ? नानाजी ने कहा कि रमा का विवाह तो हो गया परन्तु इस बन्धन से अब उसको कैसे निकाला जाये, क्या किया जाए ? बाबा ने कहा कि कोई बात नहीं, ठाकुरजी हैं, उसको भक्ति करवाओगे तो उसके रास्ते में कोई भी बन्धन नहीं होगा । इस तरह बाबा ने आश्वासन दिया तब फिर नानाजी को संतोष हुआ । नानाजी नहीं चाहते थे कि मेरा विवाह हो, वे चाहते थे कि मेरा जीवन भगवद्भजन में ही बीते । मेरा विवाह इन्दौर में हुआ था किन्तु ठाकुरजी की कृपा से जयपुर में स्थानान्तरण हो गया । जयपुर में आ जाने से ब्रज मेरे लिए समीप ही हो गया । अपने आप ही भगवान् ने सब ऐसी ही व्यवस्था बना दी कि जयपुर में आने के बाद तो ब्रज में आने का अवसर खूब मिलता रहा । यहाँ तक कि तब तो घर से विरोध करके, बिना किसी को बताये भी ब्रज में श्रीबाबा के सानिध्य में मेरा आना होता रहा । घर में किसी को पता ही नहीं चलता और मैं जयपुर से बस में बैठकर बरसाना आ जाती थी । गह्वर वन में सत्संग और संकीर्तन आराधना के लिए रस कुञ्ज का निर्माण तो सन् २००८ में हुआ था । इसके पहले तो पुरानी कुटी में ही सत्संग और संकीर्तन आराधना होती थी । सन् २००२ में भी इस कुटी का स्वरूप कुछ बदला था । श्रीबाबा सुबह का सत्संग मान मन्दिर में अपने छोटे से कमरे में करते थे । उस समय वहाँ स्त्रियाँ नहीं जाती थीं, उन दिनों वहाँ स्त्रियों का प्रवेश नहीं था । प्रारम्भ में तो श्रीबाबा ने बहुत ही एकान्तिक भजन किया था ।

मुझे याद है कि नानाजी-नानाजी बरसाना में एक पंडा जी के घर में कमरा बनवाकर रहते थे तो शाम के समय ही वे बाबा के पास गह्वर वन में आते थे । वे बरसाना के उसी निवास स्थान में अपने सारे परिवार को बुलवाते थे । सारा परिवार उनके निवास स्थान पर ही बरसाने में आता था । वहाँ से नानाजी ने चिकसौली निवासी बण्डा जी को रिक्शे के द्वारा गह्वर वन तक ले जाने के लिए नियुक्त कर रखा था । नाना-नानी जब गह्वर वन में बाबा के सत्संग के लिए शाम को आते थे तो टॉर्च आदि लेकर आते थे क्योंकि यहाँ रात को बिजली की अधिक सुविधा नहीं थी । हम लोग भी जब आते थे तो गह्वर वन में श्रीबाबा के सत्संग का लाभ उठाते थे और श्रीजी का दर्शन करके बरसाना में नानाजी के निवास स्थान पर चले जाते थे । श्रीबाबा ने एक बार नानाजी से कहा कि रमा को रात को यहीं रहने दो तो मैं एक बार यहीं गह्वर वन में रुकी भी थी । मेरी स्मृति में यही है कि मुझे श्रीबाबा महाराज का बहुत प्रेम मिला ।

सन् १९८८ में राधारानी ब्रज यात्रा का शुभारम्भ हुआ था । प्रारम्भ में तो यात्रा वार्षिक नहीं होती थी । तीन साल में एक बार होती थी । सन् १९९५-९६ की यात्रा के दौरान मैं जयपुर में आ गयी थी । उस समय नानीजी की दोनों बहनों ने बाबा के साथ ब्रज यात्रा की थी । वह यात्रा बड़ी ही दुर्गम थी और गर्मियों के मौसम में होती थी । उस यात्रा में टेंट आदि की कोई सुविधा नहीं होती थी । उस यात्रा में मैं और मेरी मौसी बीच-बीच में आया करते थे । नाना और नानी ने पूरी यात्रा की थी । सन् १९९७ की यात्रा में हमारे पूरे परिवार ने यात्रा की थी । नानीजी ने नानाजी के निधन के बाद फिर कभी गह्वर वन को नहीं छोड़ा । रस मन्दिर के घेर में इस समय जो रासेश्वरी विद्या मन्दिर स्कूल है, तब स्कूल नहीं था, वहीं एक कमरे में नानीजी रहती थीं । सन् २०१२ में उनका निधन हुआ था । नानी जी बाबा को अपना पुत्र मानती थीं । जैसे देवहूति माता के पुत्र थे भगवान् कपिल । उसी प्रकार नानीजी बाबा को कपिल मुनि के रूप में ही अपना पुत्र मानती थीं । जब शाम को बाबा कुटी में सत्संग देते थे तो नानीजी बैठ जाती थीं । अधिक वृद्धावस्था के कारण उनको सुनायी नहीं देता था किन्तु वे बड़ी ही श्रद्धा और प्रेम के साथ बाबा का मुखमण्डल देखा करती थीं तथा उनको एक इत्र का फोवा और एक पान की बीड़ी देती थीं । बाबा के लिए यही कहतीं कि ये तो मेरे कपिल मुनि हैं । मुझे भी यही प्रतीत होता है कि बाबा महाराज की कृपा ही मुझे चला रही है । जब नाना-नानी बरसाना में रहते थे तो मैं वहाँ भी रहती थी । रस मन्दिर में भी मैं रह चुकी हूँ, रस कुञ्ज में भी रह चुकी हूँ । ब्रज के पर्वतों का जो खनन हो रहा था, उन पर्वतों की रक्षा के लिए श्रीबाबा महाराज के द्वारा आन्दोलन चलाया गया था तो सन् २००२ में श्रीबाबा की कृपा से मुझे भी इसमें सेवा करने का सौभाग्य मिला था । डीग और कामां तहसील के ये पर्वत राजस्थान में ही हैं और जयपुर राजस्थान की राजधानी है । इसलिए श्रीबाबा महाराज के द्वारा मुझे ये सेवा मिली कि जयपुर में जो भी सरकारी और प्रशासनिक अधिकारी हैं, उनसे मिलकर ब्रज के पर्वतों के खनन को रुकवाने के लिए मिलते रहो, उनसे बात करते रहो । इसी कार्य में सहयोग के लिए मैं राधाप्रिय को भी पहली बार बाबा से मिलवाने के लिए सन् १९९५ में लायी थी । उन्होंने अपने आप को श्रीबाबा को मन से समर्पित कर दिया । उनकी शैक्षणिक योग्यता बहुत अच्छी है । इंजीनयरिंग और कानून की भी उच्च शिक्षा उन्होंने प्राप्त की है, इसलिए पहाड़ों के खनन से सम्बन्धित क़ानूनी जितने भी कार्य थे, उन्हें श्रीबाबा की प्रेरणा से राधाप्रिय देखा करते थे । श्रीबाबा की राजस्थान में नाम-कीर्तन के प्रचार की बहुत इच्छा रहती थी तो उनकी आज्ञा से मैंने जयपुर में प्रभात फेरी निकालना आरम्भ किया ।

साधो ये मुर्दों का गाँव ।

पीर मरे पैगम्बर मरिहैं, मर गये जिंदा जोगी । राजा मरिहै परजा मरिहे, मर गये वैद्य ओर रोगी ।
चंदा मरिहैं सूरज मरिहैं, मरिहैं धरती आकाश । चौदह भुवन के चौधरी मरिहैं, इनहू की का आश ।
नाम अनाम अनन्त रहत है, दूजा तत्त्व न होई । कहे कबीर सुनो भाई साधो, भटक मरो मत कोई ॥

श्रीगुरुतत्त्व

'गुरु' शब्द सुनते ही हृदय में एक नवीन चेतना, प्रकाश, ज्ञान, आनन्द की अनुभूति होने लगती है । और हो भी क्यों न ? क्योंकि प्रत्येक शब्दाक्षर श्रीभगवान् का ही स्वरूप है, इसीलिये उन्हें 'शब्द ब्रह्म' कहा जाता है । 'शब्द ब्रह्म नूपुर रव व्यापक' 'शब्द-ब्रह्म' भी श्रीराधिकारानी के नूपुर-ध्वनि से ही व्याप्त होता है अर्थात् श्रीजी के पद-नूपुरों की आवाज से ही शब्द ब्रह्म की उत्पत्ति होती है । अतः 'गुरु' शब्द का उद्गम केन्द्र व स्रोत भी श्रीराधारानी ही हैं । कथनाशय है कि 'गुरु भाव' की परम आचार्या श्रीजी ही हैं, जिनके असीम-अनुपम करुणामय भाव से समस्त विद्या-कलाओं की प्राप्ति स्वयं परब्रह्म श्रीश्यामसुन्दर को व सखी-सहचरियों-गोपीजनों व समस्त रसिकजनों को होती है । वस्तुतः 'गुं रौति सः गुरुः' जो माया के अज्ञान रूपी अन्धकार को विनष्ट कर भक्तिमय प्रकाश में प्रवेश करा दे, उसे 'गुरु' कहते हैं । सम्पूर्ण सृष्टि में 'गुरुतत्त्व' अमोघ व अनुपम होने के कारण परमाद्भुत है; जिसकी विभुता व शाश्वत सत्ता सर्वत्र विद्यमान है । इस परम तत्त्व का अनुभव श्रीभगवत्कृपा से सत्संग-चर्चा से ही होता है । मानव-जीवन की सार्थकता में श्रीगुरुदेव भगवान् की ही विशेष कृपा का महत्त्व है । वैसे तो समस्त जीवों को कहीं भी किसी भी समय जो भी सच्चा मार्गदर्शन मिला है, उसमें गुरु की ही अहैतुकी कृपा-करुणा छिपी हुई है । 'गुरु' का सरल शब्दों में यही अर्थ है कि हमें जिससे भी वास्तविक बोध हो, वही गुरु है । विशुद्ध भक्तिमय भावनाओं की प्रेरणा प्रदान करना ही 'दीक्षा' कहलाती है । श्रीनारदपुराण में कहा गया है –

दिव्यं भावं यतो दद्यात् क्षिणोति दुरितानि च । अतो दीक्षेति सा प्रोक्ता सर्वारम्भ विशारदैः ॥

जो दिव्य भावों के द्वारा कलुषित 'असद्' विचारों को नष्ट कर दे, वही सच्ची दीक्षा कहलाती है । मानव देहधारियों को जो विशुद्ध सत्संग के द्वारा भक्तिमयी भावनाओं की प्राप्ति होती है, यही सबसे बड़ी गुरु-दीक्षा होती है ।

'समझ रस को इक पावै हो । गुरु बिन तपन बुझै नहीं, प्यासा नर जावै हो ॥'

सच्चे गुरुजन ही जीव की अनादिकाल की आध्यात्मिक प्यास बुझाते हैं, नहीं तो प्यासा ही मर जाता है ।

समस्त गुरुजनों की परमाचार्या 'श्रीराधारानी' हैं । अतः हम ये भी कह सकते हैं कि श्रीराधिकारानी के नाम-धाम की शरणागति में समस्त गुरुजनों की शरणागति सहज ही हो जाती है । संसार में जो सच्चे सद्गुरुजन होते हैं, वे परम शरणागति के मार्ग में कभी भी बाधक न बनकर हर तरह से सहयोग करते हैं, ऐसे गुरुजन परम सत्य बात को कहने -सुनने में कोई भी दुराव-छिपाव नहीं करते हैं । इसीलिये श्रीभागवतजी को पुराणतिलक कहा गया है क्योंकि उसमें आदि-मध्यान्त परम शरणागति का कथन करते हुए विशुद्ध भागवत धर्म का ही निरूपण किया गया है ।

कहने का तात्पर्य यही है कि वास्तविक गुरु 'श्रीभगवान्' को ही परम प्रियतम बताते हैं; ऐसे गुरु साक्षात् भगवान् के ही स्वरूप होते हैं, उनकी शरणागति भगवान् की शरणागति ही होती है, ऐसे गुरुजनों की कृपा से श्रीधाम की कृपा व अखण्ड ब्रजवास सहज ही मिल जाता है; वास्तविक गुरुजन हमें परम धाम 'श्रीब्रज' की निष्ठा अवश्य सिखाते हैं, इससे परम गुरु स्वरूपा 'श्रीराधिकारानी' परम प्रसन्न होती हैं । श्रीधामेश्वरी राधारानी परम करुणामयी हैं, उनके करुणा के कारण से सतत् सजल नेत्र रहते हैं; वे नित्य निरन्तर यही चाहती हैं कि समस्त जीव श्रीधाम की शरणागति अनन्य भाव से लें । श्रीधाम में अनन्यभाव से सत्संगनिष्ठापूर्वक निवास करने से ब्रजभावभावित लीलाओं का रसास्वादन सहज ही धामेश्वरी की कृपा-करुणा से होने लगता है ।

(१) रसिया -तर्ज – सबसौं सुन्दर है बरसानों.........
अब तो ब्रज रस हिय सरसाओ, हमारे श्रीसद्गुरु भगवान ॥
मिथ्या विषयन छोड़ कै आई,
राधाकृष्ण की आस लगाई,
पल-पल में माया टकराई,
भवसागर की रैन अँधेरी, डूब्यौ जाय जहान ।
काम-क्रोध की लहरें आवैं,
विविध ताप तापनि में जरावैं,

कबहूँ शान्ति तनक न पावैं,
उठ्यौ भभूड़ौ मोहजाल कौ, सजके अपने बान ।
भाव भगति कछु मोमें नाहीं,
जाते श्याम ढरैं मो माहीं,
कृपादृष्टि की अरज लगाहीं,
भटकी बहुत भई हूँ गुरुवर, बेर ते होवै आन ।
श्रीगुरुचरण-शरण में आई,
अति रसमय गहवरवन पाई,
संतन्ह श्री कृपा दरसाई,
ब्रह्मा-शिव तरसैं याकौ ह्याँ, श्रीसखियन सम्मान ।
नित्य विहार प्रेम कौ धामा,
अपने हाथ बनायौ श्यामा,
जाते परम प्रिय अभिरामा,
पाऊँ नित्य वास गहवरवन, करूँ रसिकन गुणगान ॥

(२) तर्ज – हम निर्बल तुमको टेर रहे; तुम सुन लेना, तुम सुन लेना ।

इस दीन हीन निर्बल मन को, गुरुदेव पवित्र बनाते हैं ।
राधारसमय सेवा-आराधन, भाव श्रीभक्ति सिखाते हैं ॥
सच्चा आश्रय है गुरुवर का,
उनकी शरणागति है सच्ची,
दुनिया वाले तुम समझ चलो, गुरु ही सन्मार्ग बताते हैं ।
जिसने कुछ भी पाया जग में,
श्रीसंत-संग सत्प्रेरक था,
अरे, सोच समझ लो हे भाई ! गुरुजन कल्याण कराते हैं ।
जो जब भी है भूला-भटका,
वह 'संत-भक्त' अपराध ही था,
यहाँ हानि-लाभ मंगल-मारग, सत्संगी ही समझाते हैं ।
है संत-संग जिसने छोड़ा,
वह दर-दर की खाता ठोकर,
सत्संग की महिमा अनुपम है, जो श्रद्धावान जानते हैं ।
जीवन यदि सफल बनाना है,
तो संत-भक्त सेवा करना,
भक्ति-सार सेवा ही है, ये अनुभव संत कराते हैं ॥

श्रीब्रज की शोभा 'सावन'

'सावन' नाम सुनते ही एक विशेष आनन्दानुभूति होती है, सहज ही मन में हर्षोल्लास की तरंगे आने लगती हैं; इस रहस्य का एक विशेष रसमय कारण है । वस्तुतः 'सावन' शब्द का सरल शाब्दिक अर्थ है – 'सा वन' अर्थात् वही वन, जहाँ श्रीराधामाधव युगल रसराज की रसमयी लीलाएँ प्रकट-अप्रकट रूप से नित्य-निरन्तर होती रहती हैं, वह है ब्रज-वृन्दावन । यहाँ तक कि वास्तविक ब्रजरसिकों ने तो और विशेष सारगर्भित भाव को कहा है –

'बीस कोस वृन्दा विपिन, पुर वृषभानु उदार । तामें गहवर वाटिका, जामें नित्य विहार ॥'

कथनाशय है कि 'ब्रजारण्य' ही परम रमणीक-सुहावना व परम माधुर्यमयी सरस लीलाओं का वन है, उसमें भी बरसाना-गह्वरवन तो इस सम्पूर्ण सरस वन के सौन्दर्य का मूल स्रोत व आधारिक केन्द्र है । वर्षा ऋतु के चार महीनों (आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन) में 'श्रावण' मास में ही लता-पता, पेड़-पौधे, वृक्ष इत्यादि विशेष रूप से हरे-भरे होने से सम्पूर्ण वन की हरियाली की छटा अत्यन्त सुशोभित होती है । ब्रज-वसुन्धरा के वनों के मनोहारी दृश्यों का प्रभाव केवल भारतवर्ष पर ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के धरातल पर पड़ता है । श्रावण महीने में ब्रज की स्थिति को देख-सुनकर बाहरी प्रान्त व देश-विदेश के लोगों के मुख से सहज ही निकल पड़ता है – 'सा वन !!' अर्थात् 'ब्रजावनि का वन कितना अद्भुत आनन्द देने वाला है !!!' 'सा वन.....सा वन .....सा वन .....कहते-कहते ही 'सावन' नाम पड़ गया, 'सावन' को ही 'श्रावण' कहा जाता है । इस तरह जगह-जगह जन-जन में ब्रज की मनोहारिणी महिमा का गुणगान होता रहता है । ब्रजभूमि के समस्त वनों की हरी-भरी सुन्दर-सुखद प्रकति को देखकर सहज ही ब्रजवासियों का मनमयूर नाच उठता है । क्योंकि ब्रज की संस्कृति ही संगीतमय (नृत्य-गानमय) है । संगीत साक्षात् श्रीजी का ही स्वरूप है । धामेश्वरी श्रीराधिकारानी की कृपा-करुणा से ब्रजवासी भी संगीतमय बन गए हैं, संगीतमयी आराधना ही ब्रज का प्राण है । ऐसी

स्थिति में रोम-रोम में संगीतमय रसगान के संस्कारों से ओतप्रोत ब्रजवासीजन बिना नाचे-गाये कैसे रह सकते हैं ? अतः स्वाभाविक ही सम्पूर्ण ब्रजमण्डल श्रीराधामाधव के सरस लीलाओं के गुणगान से गूँज उठता है । साधारण से साधारण ब्रजवासी भी अपने सहज बोलचाल की भाषा (ब्रजभाषा, सरल ग्रामीण बोली) में गुनगुनाने लगते हैं । जगह-जगह ग्रामीण क्षेत्रों तथा नगला, शहर, क़स्बा, नगर इत्यादि में रात-दिन कई-कई घंटों गीतों का गान होता है; इसी को 'सावन के ब्रज-लोकगीत' कहा जाता है । ब्रज के लोक-गीतों को समस्त रसिक संत-महापुरुषों ने भावना के अनुसार अपनी-अपनी वाणियों में गाया है । ब्रज के अलौकिक वातावरण व सावन के गीतों की तरंगे सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैलती हैं, जिसका भक्तिमय प्रभाव सारी दुनिया में पड़ता है । श्रीमहावाणीकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजीमहाराज लिखते हैं –

'सावन सहज सुहावनो, अति बढ़ावनो रंग ।' 'मास सावन सुख-बढ़ावन, पुरवनो मन-काज ।'

सावन मास में जैसी हरियाली चारों ओर छाई होती है, वैसे ही नृत्य-गान के हरियाली की भी दिव्य शोभा होती है । रसिकजनों के प्रेम की प्यास सावन के महीने में बुझती है मानों कई महीनों की मनोवांछित कामना सरस नृत्य-गान के माध्यम से इसी महीने में पूर्ण होती है । 'सावन' का महीना चातुर्मास्य के अन्तर्गत आता है । पुराणों के अनुसार चातुर्मास्य (आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन) में ही देवता लोग शयन करते हैं । वाराहपुराण में लिखा है कि देवताओं के शयनकाल में पृथ्वी के समस्त तीर्थ (समुद्र से लेकर सरोवर तक के जितने भी कल्याणकारी तीर्थ हैं, वे सब) ब्रजभूमि में आ जाते हैं – **"पृथिव्यां यानि तीर्थानि आसमुद्रं सरांसि च । मथुरायां गमिष्यन्ति प्रसुप्ते च सदा मयि ॥"**

इसलिए इस समय (चातुर्मास्य में) जो भी ब्रज में आकर उपासना-आराधना करता है, उन्हें समस्त तीर्थों के स्नान का फल सहज ही मिल जाता है । इसीलिये ब्रज में इन चारों महीनों में विशेष भीड़ होती है, सावन के महीने में तो ब्रज-वृन्दावन में जगह-जगह रासलीला, रामलीला, सावन के झूलों का गुणगान इत्यादि होता रहता है ।

यहाँ तक कि 'सावन' की महिमा का गुणगान तो गोस्वामी तुलसीदासजीमहाराज ने भी श्रीरामचरितमानस में श्रीभगवान् के नाम की विशेषता बताते हुए किया है – **बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।**

राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥ (श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड – १९)

उपरोक्त दोहे में श्रीगोस्वामीजी ने श्रीभगवन्नाम से 'श्रावण-भाद्रपद' मास की उपमा दी है अर्थात् ये स्पष्ट होता है कि इन महीनों में श्रीभगवान् के नाम-रूप-लीला-धाम-जन इत्यादि का गुणगान विशेष रूप से होता है ।

श्रीराधामाधव युगलरसराज के आविर्भाव का महीना भी 'भाद्रपद' है; इसीलिये इन महीनों में सर्वाधिक भक्तजन 'ब्रजभूमि' में आते हैं । जेठ और आषाढ़ की शरीर को झुलसा देने वाली भीषण ग्रीष्म ऋतु के पश्चात् सावन का आगमन होता है । उस समय आसमान में चारों तरफ काले-काले बादल उमड़-घुमड़कर सृष्टि को जीवन देने वाले जल की घनघोर वर्षा करते हैं । इससे केवल मनुष्य ही नहीं अपितु चराचर समस्त प्राणियों को राहत मिलती है । जेठ-आषाढ़ की गर्मी से पृथ्वी सूख जाती है । सावन में वर्षा के जल से सिंचकर वह हरी-भरी हो जाती है और सब जगह नेत्रों को शीतलता प्रदान करने वाली हरियाली छा जाती है । बादलों को देखकर मोर प्रसन्नता के कारण हर्ष ध्वनि करते हैं और अपने रंग-बिरंगे पंख को फैलाकर नृत्य करने लगते हैं, पपीहा भी बादलों को देखकर पीयू-पीयू की रट लगाने लगता है । सावन मास में ब्रज भूमि की अलौकिक ही छटा हो जाती है और फिर तो राधा-माधव अपनी सखियों के साथ वन में विहार करते हैं । सावन मास की विशेषता यह है कि जब चारों ओर से बादल रिमझिम-रिमझिम वर्षा करते रहते हैं और पेड़ हरे-भरे हो जाते हैं, उस समय गोपियाँ झूलन उत्सव मनाती हैं । यमुना के किनारे कदम्ब वृक्ष की डाल पर अथवा किसी सघन कुञ्ज में किसी विशाल वृक्ष की डाल पर सखियाँ झूला डालती हैं और उस झूले पर श्रीराधामाधव विराजमान होकर झूला झूलते हैं, उस समय सखियाँ-सहचरियाँ मधुर गीत गाती हैं । ब्रज में प्रत्येक उत्सव और ऋतु के आधार पर विभिन्न लोक गीतों की रचना की गयी है । इसी प्रकार सावन मास में प्रकृति की मधुर शोभा और झूलन उत्सव के कारण ब्रज के लोक गीतों का भी सुन्दर ढंग से गायन होता है । सावन में विशेषकर हरियाली तीज से झूलन उत्सव का आरम्भ होता है ।

उस समय राधा-माधव सखियों के साथ झूला झूलते हैं । कभी श्रीजी हिंडोले पर विराजमान होती हैं तो श्यामसुन्दर उन्हें झूला झुलाते हैं तो कभी श्रीकृष्ण झूले पर विराजमान होते हैं और राधारानी उन्हें झूला झुलाती हैं । इस अवसर पर सखियाँ मधुर-मधुर झूलन के गीत गाती हैं । बिना गीतों के गायन के सावन के उत्सव का कोई महत्त्व नहीं है । इस तरह सावन में राधा-माधव और गोपीजनों के द्वारा झूलन उत्सव पर जो गीत गाये जाते हैं, उसका प्रभाव ब्रज संस्कृति पर पड़ा और इसीलिए ब्रजवासी भी सावन मास में गीतों के गान के साथ ही झूलन उत्सव मनाते हैं । ब्रज में सावन के लोकगीतों पर ब्रज के रसिक महापुरुषों की रचनाओं का भी प्रभाव पड़ा है । जैसे गोवर्धन पर्वत पर स्थित श्रीनाथजी के मन्दिर में महाप्रभु वल्लभाचार्य जी और उनेक सुपुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथजी के द्वारा अष्टछाप के सन्त-कवियों की नियुक्ति की गयी, जो सदा ही राधा-माधव की लीलाओं का गान किया करते थे, उनमें सूरदासजी, कुम्भनदासजी, गोविन्द स्वामीजी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । इन सभी ब्रजभाषा के सन्त कवियों ने कृष्ण लीला के गायन में सावन मास में भी वर्षा ऋतु के अनुरूप काव्य की रचना की थी । इनके द्वारा गाये हुए गीत अत्यधिक लोकप्रिय हुए और इस तरह उसका प्रभाव ब्रज के लोक गीतों पर भी पड़ा । ब्रजवासी भी सावन में झूलन उत्सव मनाते समय इन महापुरुषों के गीतों से प्रेरणा लेकर श्रीकृष्ण लीला सम्बन्धी लोक गीतों को गाने लगे । इसी प्रकार वृन्दावन में स्वामी हरिदासजी भी संगीत के माध्यम से अपने श्यामा-श्याम की आराधना करते थे । तानसेन उनका शिष्य था । स्वामीजी से संगीत शिक्षा प्राप्तकर वह अकबर के नव रत्नों में से एक बन गया था । उसके मुख से स्वामी हरिदासजी के संगीत की प्रशंसा सुनकर अकबर वृन्दावन में अपने राजसी वेष का त्यागकर एक नौकर के वेष में आया था और तानसेन के साथ स्वामी हरिदासजी का गीत सुनने के लिए निधिवन में गया । तानसेन ने अकबर को निधिवन के द्वार पर खड़ा कर दिया और भीतर देखने गया कि स्वामी जी क्या कर रहे हैं ? उसने देखा कि स्वामी जी तो निधिवन की कुंजों में राधा-माधव की लीलाओं का चिन्तन कर रहे थे । उस समय उनसे गाने का आग्रह करना उसे ठीक नहीं लगा क्योंकि स्वामीजी का संगीत संसार के लोगों को रिझाने के लिए नहीं था किन्तु अकबर तो दिल्ली से नौकर का रूप धारण करके उनके संगीत को सुनने के लिए ही आया था । अतः उसकी मनोकामना की पूर्ति के लिए तानसेन ने स्वामीजी के सिखाये हुए एक राग को जानबूझकर गलत ढंग से गाना आरम्भ किया । यह देखकर स्वामीजी का ध्यान भंग हुआ और उन्होंने तानसेन से कहा – 'तन्ना ! इतने सुन्दर राग को इतने गलत ढंग से तुम क्यों गा रहे हो ?' तानसेन ने कहा – 'महाराज ! मैं इस राग को भूल गया था, अतः आप बताइए कि इसे सही रूप से कैसे गाया जाता है ?' उस समय जेठ-आषाढ़ का महीना था तो स्वामी जी ने सावन के अनुरूप मेघ मल्हार राग गाया और उसी समय आसमान में चारों ओर से काले बादल आ गये और मूसलाधार वर्षा होने लगी । स्वामी हरिदासजी ने अपने गान के माध्यम से आषाढ़ की ग्रीष्म ऋतु में सावन की रचना कर दी । उनके गान को सुनकर अकबर रोमांचित हो उठा, उसके नेत्रों से प्रेम और आनन्द के अश्रु प्रवाहित होने लगे और वह स्वामी जी के चरणों में नतमस्तक हो गया । इसी प्रकार निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य श्रीभट्टदेवाचार्यजी एक बार सावन के महीने में ब्रज की किसी निकुंज में बैठकर अपने इष्ट श्रीप्रिया-प्रियतम का चिन्तन कर रहे थे । अकस्मात् ही उनके मन में ऐसा भाव उठा कि सावन के इस लुभावने मौसम में यदि चारों ओर से मूसलाधार वर्षा होने लगे और उस समय मैं श्यामा-श्याम को अपनी आँखों से वर्षा के जल से भीजते हुए देखूँ तो कितना ही अच्छा हो । अपने भावों को व्यक्त करते हुए उन्होंने गीत गाया – **भीजत कब देखौं इन नैंना । श्यामा जु की सुरंग चूनरी, मोहन को उपरैंना ॥**
जुगल किशोर कुञ्ज तर ठाड़े, यतन कियो कछु मैंना । उमड़ी घटा चहुँ दिशि 'श्रीभट्ट'जुरि आई जल सैंना ॥

सच्चे भक्त की अभिलाषा को पूर्ण करने में श्रीराधा-माधव तनिक भी विलम्ब नहीं लगाते । उसी समय आचार्यचरण ने देखा कि आसमान में चारों ओर से काले-काले बादल उमड़ आये और बड़े ही जोर से वर्षा होने लगी । उसी समय उन्होंने देखा कि ब्रज की एक सघन कुञ्ज में श्यामा-श्याम खड़े हैं और वर्षा के जल में भीज रहे हैं । इसी प्रकार परम ब्रज भक्ता श्री मीराबाई ने भी सावन के अनुरूप कृष्ण लीला का गान किया है । एक पद में वे कहती हैं –'सावन मेहा बरसे,

दादुर मोर पपीहा बोले ।' सावन में बादल जल की वर्षा कर रहे हैं और दादुर, मोर तथा पपीहा आदि जीव-जन्तु हर्ष के कारण मीठी ध्वनि कर रहे हैं । एक पद में श्रीमीराबाईजी विरहावस्था में सावन के महीने को स्मरण करती हैं –

कोई कहियो रे प्रभु आवन की, आवन की मन भावन की । आप न आवै लिख नहिं भेजै, बाण पड़ी ललचावन की ।
ए दोउ नैण कह्यो नहिं मानै, नदिया बहै जैसे सावन की । कहा करूँ कछु बस नहिं मेरो, पंख नहिं उड़ जावन की ।
'मीरा' के प्रभु कब रे मिलोगे, चेरी भई हूं तेरे दांवन की ॥

अनन्य ब्रजनिष्ठ निष्किंचन महापुरुष श्रीकुम्भनदासजीमहाराज भी अपनी वाणी में श्रावण-लीला का गान करते हैं –

हरी संग झूलत हैं ब्रजनारी । सावन मास फुही धोरी धोरी तैसेयी भूमि हरियारी ॥
नव घन नव वन नव चातक पिक, नवल कसूँमी सारी । नव किशोर वाम अंग शोभित, नव वृषभानु दुलारी ॥
विद्रुम खंभ खचित नग पटुली, डांडी सरस सँभारी । 'कुंभनदास' प्रभु मधुर झोटका, देत लाल गिरधारी ॥

इस तरह देखा जाए तो ब्रज के लोक गीतों पर ब्रज भाषा के रसिक सन्तों की वाणी का भी प्रभाव पड़ा है । आज भी सावन का आरम्भ होते ही विशेषकर हरियाली तीज से लेकर पूरे सावन भर ब्रज गोपिकायें अपने-अपने घरों के बाहर किसी वृक्ष की ऊँची डाल पर झूला डालकर झूलती हैं और बड़े ही उत्साह के साथ सावन के गीतों को गाती हैं ।

गीत का गायन तभी सम्भव होता है जब हृदय में रस और प्रेम की अनुभूति हो तथा इसके अनुरूप ही बाहर की छटा भी हो तो सावन में वैसे ही चारों ओर हरियाली छायी रहती है, वर्षा की झड़ी लगी रहती है । उसको देखकर हृदय में रस का आविर्भाव होता है और रसीली ब्रजभूमि के संयोग से ब्रजवासी रस-सिक्त होकर मस्ती में राधा-कृष्ण की लीलाओं पर आधारित ब्रजभाषा के लोकगीतों का गायन करने लगते हैं ।

ब्रजभूमि के अनन्य ब्रजनिष्ठ सन्त श्रीरमेश बाबा महाराजजी भी जब अपनी जन्म भूमि प्रयाग का त्याग करके बरसाना में पधारे और यहाँ मानिनी के मान भवन श्रीमानगढ़ में रहने लगे तो उन्हें भी ब्रजवासियों के लाभ हेतु राधा-कृष्ण की लीलाओं पर आधारित ब्रजभाषा के लोक गीतों की आवश्यकता की अनुभूति हुई और फिर तो उन्होंने राधा-माधव एवं गोपीजनों की प्रेम लीलाओं पर आधारित लोकगीतों के विशाल साहित्य की रचना की, जो वर्तमान में मान मन्दिर सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'रसिया रसेश्वरी' के रूप में जनसाधारण को सहजता से उपलब्ध हैं । श्रीबाबा महाराज ने इस पुस्तक में ब्रज लीलाओं के लोकगीतों की इस प्रकार रचना की है कि ऐसा लगता है कि लीला साक्षात् देखकर लिखी गयी हो । सावन के गीतों की अलग से 'सावन' तथा 'झूलन माधुरी' के माध्यम से विस्तार से रचना की गयी है । जिसमें कुछ गीत हैं – **'मोरा कोंहक कोंहक के बोलें, आई सावन की बहार ।', 'सावन की अँधियारी रात बिजुरिया चमकै आरम्पार ।', 'रसीलो सावन आयो, झूलें कदम की छाँह ।'** मानमन्दिर के आराधना-भवन 'रसमण्डप' में प्रतिदिन संगीतमय नृत्य-गान के माध्यम से राधा-माधव की आराधना होती है । जिसमें मानमन्दिर की साध्वियाँ और परम पूज्य श्रीबाबामहाराज द्वारा रचित 'रसिया रसेश्वरी'के माध्यम से ब्रज के लोकगीतों का गायन करते हैं । सावन के पूरे महीने में इस पुस्तक पर आधारित सावन के लोकगीतों का गायन होता है । हरियाली तीज पर विशेष कार्यक्रम होता है । श्रीराधामाधव को हिंडोले पर विराजमान करके दो घंटे तक उनके समक्ष पूरे सावन भर सावन के लोकगीत गाये जाते हैं –

परमरसमय महापर्व 'श्रीहरियाली तीज'

श्रीहरियाली तीज ब्रजभूमि का विशेष सरस महोत्सव है । वस्तुतः सत्य बात तो यही है कि श्रीजी की अति अनुकम्पा से ही कुछ अंश में ब्रज के इन रसमय उत्सवों का महत्त्व हमें समझ में आ सकता है; नहीं तो हमारे मन-बुद्धि से सर्वथा अगोचर ही है । समझने की तो बात दूर रही, हम कल्पना भी नहीं कर सकते इन महापर्वों के वास्तविक महत्त्व का । अब प्रश्न होता है कि नित्य-निरन्तर बरसने वाली श्रीराधारानी की कृपा-करुणा हमें कैसे प्राप्त हो ? तो वह सबसे सरल-सरस एकमात्र उपाय है – 'श्रीब्रजनिष्ठ संत-महापुरुष में सर्वात्मभाव से शरणागति'; हमलोगों को ऐसी दिव्य सन्निधि

पूज्यश्रीबाबामहाराज की मिली हुई है, बस आवश्यकता है सच्ची शरणागति की; वह पराश्रद्धा वाली शरण हम लोगों को उनके सत्संगमयी वाणी का श्रवण-मनन-चिंतन करने से सहज ही मिल जाएगी ......तब हमें ब्रज, ब्रजवास व ब्रज के सरस उत्सवों की महिमा का बोध सहज ही होने लगेगा .....मन में सरस ब्रजभावों का अपने आप आविर्भाव होगा.....फिर तो सदा के लिए परम कृतार्थ हो जायेंगे .....

अब कम शब्दों में 'हरियाली तीज' का महत्त्व यही है कि इस दिन श्रीसखी-सहचरियाँ श्रीराधामाधव की झूलनलीला का संवाहन करती हैं, इस लीला में समस्त दिव्य रसों का आस्वादन होता है, रस की परावधि है ये लीला; एक रूप में हम ये भी कह सकते हैं कि ब्रज-वसुन्धरा की उपासना का रस विशेष रूप से हरा-भरा (नवनवायमान) हो जाता है । अतः उपास्य व उपासकजनों में उत्साह-उमंग-उत्कंठा-लगन-तत्परता-श्रद्धा-भाव-प्रेम इत्यादि का सहज ही संवर्द्धन होने लगता है । इसलिए श्रीब्रजमण्डल के हरियाली तीज के इस रसोत्सव रूपी महापर्व का प्रभाव केवल भारतवर्ष पर ही नहीं अखिल विश्व पर पड़ता है । श्रीमहावाणीकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजीमहाराज तो इस रसपर्व की साक्षात् अनुभूति करते हुए लिखते हैं – **रमन तीज सब सहचरी, चली जुगल मिलि संग । सावन सहज सुहावनो, अति बढ़ावनो रंग ॥**

सहज सुहावनो दिन आज । मास सावन सुख बढ़ावन, पुरवनो मनकाज ॥

श्रीमहावाणी-ग्रंथकार ने हरियाली तीज को 'रमन तीज' कहा है अर्थात् जो परम प्रिय लगने वाला अवसर है, श्रीजी की सखी-सहचरियों की समस्त इच्छाएँ इस अवसर पर सहज ही पूर्ण हो जाती हैं । इस दिन प्रिया-प्रियतम श्रीराधामाधव युगल रसराज को सखी-सहचरियाँ हरे-भरे लता-पताओं से सुशोभित हिंडोले पर झूला झुलाती हुई अति आनन्दित होती हैं । श्रीब्रजमण्डल के समस्त उत्सव-पर्व सहज ही दिव्य रस में परिवर्तित हो जाते हैं, उसमें भी हरियाली तीज के परम मंगलमय दिवस में तो सभी रसोत्सवों के रस विशेष रूप से हरे-हरे हो जाते हैं अर्थात् अति उत्साह से भरकर परम प्रफुल्लित होते हैं ।

रसिया-तर्ज – वृषभानुनन्दिनी सजनी बनी .....।
तीज हरियाली श्रीराधेजू सजीं ।
सखियन ने श्रृंगार कियौ है, रोम-रोम रँग प्रेम-रँजी ॥
सहचरियन मिल साज बनायौ, मधुमय मंगल साज बजी ।
श्रीशोभा की अद्भुत झाँकी, देखन कूँ सब काज तजी ॥
लता-पता सुन्दर हरियाली, आशिष देवैं सजी-धजी ।
हरौ-हरौ हि हिंडौरा सोहै, सुन्दरता भी देख लजी ॥
श्याम श्यामा संग झूल रहे हैं, दें झोटा सखी प्रेम भजी ।
मन भावन सावन है आयौ, परिपूरन आनन्द मँजी ॥
संगीत गान की सरिता बहवै, ताल देन कौ घन गरजी ।
ब्रज-शोभा ही है ये सावन, जान्यौ रसिकन भाव भजी ॥
तीज हरियाली याद करावै, हरौ-भरौ सब साज सजी ।
अति आनन्दकर है ये अवसर, आवै भीड़ बहु भजी-भजी ॥
संत-पुरानन-वेद बतावैं, चतुर्मास ब्रज तीर्थ भजी ।
सब तीरथ भी ब्रज में आवैं, करि स्नान ब्रजरसहि रँजी ॥
ब्रज में जन वांछित फल पावैं, छटा विशेष सावनहि सजी ।
हरियाली हो रस मन भावन, ब्रजरस श्रीरसिकनहि भजी ॥

श्रीभक्तमाल-सुमेरु गोस्वामी 'तुलसीदासजी-जयन्ती'

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीमहाराज का अवतरण कलियुग के महापापी जीवों के कल्याण के लिए इस धराधाम पर हुआ था । श्रीगोस्वामीजी का जीवन भी साक्षात् रामायण की भावनाओं का मूर्तिवन्त स्वरूप है । आपने जैसा श्रीरामचरितमानस में लिखा व कहा है, वैसा ही आपके भक्तिमय आचरण में भी उतरा हुआ था । आपकी कथनी-करनी में अक्षरशः एकरूपता होने के कारण ही श्रीभक्तमालकार श्रीनाभाजीमहाराज ने आपको 'श्रीभक्तमाल-सुमेरु' की उपाधि से सम्मानित किया है । गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीमहाराज द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस की भक्तिमयी भावनाओं से सम्पूर्ण जीव-जगत् विशेष रूप से प्रभावित है । 'श्रीरामचरितमानस' को ही जनसामान्य रामायण कहकर पुकारते हैं, जिसकी चौपाई-दोहे जन-जन की जिह्वा पर विराजमान हैं । साधारण से साधारण लोग, जिन्हें अक्षर-ज्ञान भी नहीं है, उनको भी रामायण की चौपाइयाँ रटी हुई हैं । वस्तुतः गोस्वामीजी ने श्रीमानसजी को सरल-सरस भाषा में लिखकर

बहुत बड़ा परोपकार किया है श्रीभक्तिमय समाज का । आपने बड़े-बड़े गूढ़ रहस्यमय भक्ति के सिद्धांतों को सरल रूप से सहज सरस भावमयी भाषा में समझा दिया है । विशुद्ध भक्ति के सुदुर्लभ स्वरूप को आपने सभी के लिए अति सुगम कर दिया । आपके इस असीम-अनन्त-परम उपकार के लिए हम सब लोग आपको कोटि-कोटि अनुक्षण नमन-वन्दन करते हैं । गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीमहाराज का अवतार 'सर्वजनहिताय-सर्वजनसुखाय' हुआ था । संवत् १५५४ में चित्रकूट क्षेत्र के अन्तर्गत राजापुर नामक ग्राम में श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में सप्तमी तिथि शनिवार को संध्या के समय अभुक्त मूल नक्षत्र में तुलसीदासजी का जन्म हुआ था । श्रीआत्माराम दुबे आपके पिताजी व माता श्रीहुलसीदेवी थीं, आप बारह महीने तक गर्भ में रहे, आपका जन्म परमाश्चर्यमय विचित्र ढंग का था, (वस्तुतः अवतरित संत-महापुरुषों में विचित्रता होती ही है, बस अंतर यही है कि वह 'विचित्रता' सांसारिक लोगों के सामने कभी प्रकट हो जाती है, कभी अप्रकट ही रहती है; इसी कारण प्रायः लोग 'अवतरित संतजनों' को वास्तविक भावदृष्टि न होने से पहिचान ही नहीं पाते, साधारण जीवों की तरह उनसे व्यवहार करने से बहुत बड़ा अपराध कर बैठते हैं, इसीलिये विशुद्ध भावमयी दृष्टि प्राप्त करने के लिए मानव-जीवन में सत्संग की उपलब्धि ही वास्तविक प्राप्ति है); गोस्वामी तुलसीदासजी के जन्म के सम्बन्ध में एक प्रसिद्ध दोहा है – "पंद्रह सौ चौंवन विषै, कालिन्दी के तीर । श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्‌यो शरीर ॥" गोस्वामी तुलसीदासजी का जन्म 'राजापुर' में इसलिए हुआ क्योंकि 'राजापुर' ग्राम से ही भगवान् श्रीसीताराम, लक्ष्मणजी वन में गये हैं तथा सभी अयोध्यावासी भी चित्रकूट में प्रभु से मिलने के लिए इसी मार्ग (राजापुर गाँव) से होकर गये, श्रीविदेहराज जनकजी इत्यादि मिथिलावासी भी चित्रकूट में श्रीराम से मिलने के लिए 'राजापुर' से ही होकर गये थे । श्रीभक्तमालजी में गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी की कथा का वर्णन श्रीब्रह्माजी के अवतार श्रीनाभाजीमहाराज ने किया है; ये अवतरित महापुरुष थे । जीव-कल्याण साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता, जीवों का सच्चा हित तो संत-महापुरुषजन ही करते हैं । सच्चे संत के अन्दर किसी भी प्रकार की संकीर्णता नहीं होती है, उत्तम भक्त में मेरा-तेरा की भावनाएँ नहीं होती हैं । जो घर-परिवार, जमीन-जायदाद, धन-संपत्ति, शरीर आदि में भेद-बुद्धि (मैं-मेरापन) नहीं रखता; वही महाभागवत है । संसार में प्रायः जीव इस 'मेरा-तेरा' में नाच रहे हैं, 'मेरा-तेरा' यही माया है – "मैं अरु मोर तोर तैं माया । जेहिं बस कीन्हें जीव निकाया ॥"

ये मेरा-तेरा की बुद्धि ही 'संकीर्णता' है, जो अपराध कराती है । 'कलि' माने लड़ाई या भेद-फूट; इसलिए अधिकतर कलियुग में एकता का अभाव है । अगर एकता है तो दुष्टों में होती है – "चोर-चोर मौसेरे भाई ।" दूसरे धर्मों में एकता मिल जायेगी लेकिन हिन्दू-धर्म में नहीं मिलेगी, यदि हिन्दू-धर्म में एकता हो जाए तो कलियुग ही चला जायेगा, कलियुग का बिल्कुल नाश हो जायेगा । श्रीतुलसीदासजीमहाराज ऐसे अद्भुत रामोपासक हुए हैं, जिन्होंने श्रीराम-कृष्ण में अभेद-भाव स्थापित किया है – "राम कृष्ण दोउ एक हैं, अंतर नहीं निमेष । इनके नयन गंभीर हैं, इनके चपल विशेष ॥ कित मुरली कित चन्द्रिका, कित गोपियन के साथ । अपने जन के कारने, श्रीकृष्ण भये रघुनाथ ॥" गो.श्रीतुलसीदासजीमहाराज सर्वथा साम्प्रदायिक संकीर्णताओं से शून्य थे, उन्होंने अपने सत्संग व सम्पूर्ण रचनाओं 'द्वादश ग्रंथों' में कहीं भी अपने 'गुरुदेव व सम्प्रदाय' का स्पष्ट नाम नहीं लिया है) व दीनता की पराकाष्ठा उनके जीवन में प्रत्यक्ष दिखाई देती है, जैसा उन्होंने कहा है, वैसा करके भी दिखाया – "तुलसी जाके मुखन ते धोखेउ निकसत राम । ताके पग की पगतरी मोरे तन को चाम ॥" सुदैन्य के साक्षात् स्वरूप होने के कारण भक्तमालकार श्रीनाभाजीमहाराज ने इन्हें 'भक्तमाल का सुमेरु' निर्धारित किया है । श्रीगोस्वामीजी के चरित्र-लेखन में नाभाजी ने वर्णन किया है – "कलि कुटिल जीव निस्तार हित, बाल्मीकि तुलसी भयो ॥" श्रीतुलसीदासजी 'वाल्मीकिजी' के अवतार थे । शास्त्रों में कहा गया है कि कलियुग में श्रीभगवन्नाम (कथा-कीर्तन रूपी सत्संग) के अतिरिक्त कोई भी साधन नहीं है, ये बात डंके की चोट पर गोस्वामीजी ने भी कही है – "एहि कलिकाल न साधन दूजा । जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ॥ रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि । संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥" एकमात्र श्रीभगवान् के नाम, रूप, लीला, गुण, धाम, जन इत्यादि की महिमा के स्मरण-गान-श्रवण करने में ही मानव-जन्म की सच्ची सार्थकता है । आश्चर्य की बात यह है कि रामायण की

कथा कहने-सुनने वाले लोग ही बड़े-बड़े यज्ञ करते हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि वे लोग गोस्वामीजी के अभिप्राय को समझ ही नहीं पाए । केवल भगवान् के नाम-रूप-लीला-गुणों का स्मरण-गान-श्रवण करो, यही विशुद्ध भक्ति रूपी सबसे बड़ा यज्ञ है । सच्चे रसिक भक्तजन नित्य निरन्तर श्रीभगवान् की लीलाओं का चिन्तन व गान करते हैं । भवसागर पार करने के लिए 'श्रीरामायणजी' एक नाव है, श्रीगोस्वामीजी नौका छोड़ गए हैं कि हम तो जा रहे हैं, तुम लोग इस नाव पर चढ़ करके आ जाना तो सहज ही भवसागर पार हो जाओगे । गोस्वामी तुलसीदासजी के सद्ग्रन्थ 'श्रीरामचरितमानस' से आध्यात्मिक-जगत में अलौकिक-अद्वितीय कार्य हुआ है; आज गोस्वामीजी संसार में नहीं हैं फिर भी उनके द्वारा रचित परम पावनकारी दिव्य सद्ग्रंथ 'श्रीरामचरितमानस' के माध्यम से सरल भाषा-भाव में जन-जन का अंतःकरण सहज ही भक्ति से अभिसिंचित हो रहा है ।

रसिया-तर्ज – नीलम का नगीना मेरा श्याम सलौना ।

दीन दयामय दास तुलसी कौ हौना ।
कुटिल जीव कल्याण कौ प्रगटै, दैंय कृपा कौ कौना ॥
संवत् पन्द्रह सौ चौवन में, अद्भुत बालक होय;
सावन शुक्ला सप्तमी में, शब्द 'राम' कौ होय ।
मास बारहवें गर्भ से निकरे, भूलै रोना-धौना ॥
दशन बत्तीसों विद्यमान थे, पाँच बरस के जैसे;
हुलसी आत्माराम दुःखी भये, आयौ संकट कैसे ।
अशुभ आशंका से माता ने, दियौ दासी कौ छौना ॥
छोड़ दियौ है मिथ्या जग कूँ, माँ हुलसी तुलसी की;
प्रेम-दुलार-लाड़ से पाल्यौ, जय दासी चुनिया की ।
लगभग पाँच बर्ष में गयी, लोक छोड़ विधि हौना ॥
अब तो दर-दर भटक्यौ बालक, भयौ अनाथ कोई ना;
दया हुई श्रीजगजननी की, आवैं कहैं न रोना ।
रूप बदल के भोजन देवैं, सकै जान कोई ना ॥
हुई प्रेरणा श्रीशंकर की, कृपा गुरु नरहरि की;
रामबोला कूँ शिष्य बनायौ, दी शिक्षा भक्ति की ।
सोरों में श्रीरामचरित सुन्यौ, देह-गेह सुधि हौना ॥
काशी शेषसनातनजी से, ली शिक्षा विद्या की;
वरष पन्द्रह अध्ययन में डूबे, हुई पुनि सुधि निज गृह की ।
जन्मभूमि में रामकथा कही, हुई होनी अनहौना ॥
लोक शिक्षाप्रद लीला की है, समझ सकै कोय-कोय;
भक्तिदायिनी संतन्ह-लीला, पात्र जानै जो होय ।
भयौ विवाह फँसै प्रेमजाल में, सुधि-बुधि सबही खौना ॥
जगी चेतना जब फटकार्यौ, गुरु मान्यौ पत्नी कौ;
गृह कौ त्याग बने हैं साधु, फिरैं राम-दर्शन कौ ।
राम दरस भए चित्रकूट में, लग्यौ रूप कौ टौना ॥
शक्ति कवित्त प्रकट काशी में, संस्कृत-पद्य ही रचते;
लिखते जो कुछ होवै गायब, घटना क्रम नित घटते ।
होके प्रकट कहैं श्रीशंकर, भाषा लिख्यौ सलौना ॥
शिव-आज्ञा से गये अवध में, लिखें भाषा अवधी में;
सोलह सौ इकतीस संवत्, तिथि जो जनम राम में ।
शुभारम्भ भयौ श्रीरामायन, अद्भुत अनुपम हौना ॥
ढाई वरष चल्यौ है लेखन, रामविवाह दिन पूरन;
सात काण्ड सद्ग्रंथ सरस है, होवै मन परिपूरन ।
सुनी है काशी विश्वनाथ ने, हर्षित सबकौ हौना ॥
'सत्यं शिवं सुन्दरम्' लिखकर, शिव ने सही करी है;
सहज सरस सरल भाषा में, परमानन्द करी है ।
अति उपकार है जीव-जगत् कौ, माया होवै मौना ॥
महिमा रामचरितमानस की, सरस हुई है ब्रज से;
भक्तमाल कौ मिल्यौ सुमेरु, श्रीनाभा सेवा से ।
मंगल-लेखन की सार्थकता, कृष्ण-कृपा से हौना ॥

परम दयामयी 'श्रीराधे किशोरीजू'

बाबाश्री द्वारा 'राधे किशोरी दया करो' पद की व्याख्या (१४ मार्च, २०२५)

हम लोग श्रीजी की श्रृंगाररस की लीला गाने के अधिकारी नहीं हैं, उनकी कृपा से अधिकारी बन जायेंगे, बच जायेंगे और तब उनकी श्रृंगारलीला गाने में कोई अपराध नहीं लगेगा..... नहीं लगेगा..... नहीं लगेगा ।

वस्तुतः दैन्य ही भगवान् की, श्रीराधारानी की कृपा का हेतु है । राधारानी की कृपा पाना है तो दीन बनो । गोस्वामी विट्ठलनाथजी ने कहा है – **"यद् दैन्यंत्वत्कृपा हेतुर्नतदस्तिममाण्वपि"** हे राधेश ! हे राधे ! मेरे अन्दर अणुमात्र भी दीनता नहीं है । राधा-माधव ने पूछा – अच्छा तो तुम क्या चाहते हो ? क्या मेरी कृपा पाना चाहते हो ? विट्ठलनाथजी ने कहा – मैं तो आपकी कृपा के भी योग्य नहीं हूँ । **"तां कृपां कुरु राधेश यया तद् दैन्यमाप्नुयाम् ।"** फिर भी आप ऐसी कृपा कर दीजिये, जिससे कि वह दीनता मुझे प्राप्त हो जाए । दीनता ही श्रीजी को लाएगी, सामने प्रकट कर देगी । हम जितना ही दीन बनेंगे, उतनी ही कृपा मिलेगी । इसीलिए प्रतिदिन आराधना के अन्त में यह पद हम गाते हैं – **राधे किशोरी दया करो । 'हमसे दीन न कोई जग में'** हमसे ज्यादा दीन न कोई था, न है और न होगा । न भाव है, न भक्ति है, कुछ नहीं है । इसलिए हे राधे ! हम आपकी दया के पात्र हैं । **"बान दया की तनक ढरो"** आपकी दया करने की बान (आदत) है । श्रीजी जैसा दयालु न कोई था, न है और न कभी होगा । एक राधारानी ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सबसे अधिक दयालु हैं । उन्हीं की कृपा से ब्रह्माण्ड में रस है और कृष्ण भी रसमय हैं । **"रसो वै सः । रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति ॥"** श्रीजी रसमयी हैं, श्यामसुन्दर रसमय हैं और उनको पाने के बाद जीव भी रसमय हो जाता है । आज से नहीं, सदा से, अनादिकाल से श्रीजी दया करती आई हैं । आपके समान दया करने वाली शक्ति संसार में न कोई थी, न है और न होगी । **"सदा ढरी दीनन पे श्यामा"** दीन बन जाओ, भोगी मत बनो । दीन बनोगे तो अवश्य ही कृपा मिलेगी ।

श्रीबाबामहाराज आराधना भवन रसमण्डप में उपस्थित भक्तों से कहते हैं - देखो, अब हम ८७-८८ वर्ष के हैं, फिर भी श्रीजी की दया से इस उम्र में भी हम गा रहे हैं । इतनी अधिक आयु में, संसार में बहुत कम ही कोई गायक होगा किन्तु हम गा रहे हैं, कैसियो बजा रहे हैं । जबकि पहले मेरे शरीर में बहुत ही खतरनाक रोगों का आघात हुआ । हृदयाघात हुआ, लकवा रोग का आघात हुआ । डॉक्टरों ने कहा था कि तीसरे आघात में आप नहीं बचेंगे । तीन बार मेरे ऊपर इन भीषण रोगों का आघात हुआ । तीसरे आघात के बावजूद भी हम बच गये हैं और गा रहे हैं । **"सदा ढरी दीनन पे श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो ।"** राधारानी की दया को पाने के लिए ही विषयों को छोड़ना पड़ता है । हे राधे ! हम आज तक विषयों को नहीं छोड़ पाये । **"विषम विषय विष ज्वाल माल में, विविध ताप तापनि जु जरो ।"**

'विषम विषय' – विषयों के कारण हम लोग चौरासी लाख योनियों में घूमते हैं । संसार के विष को खाओगे तो एक जन्म में मृत्यु होगी किन्तु विषय रूपी विष को खाने से चौरासी लाख योनियों में जाना पड़ेगा । हम लोग विषयों की ज्वाला में जल रहे हैं । विषम क्या है ? हर योनि में हम भोग भोगते हैं जैसे कुत्ता-कुतिया, गधा-गधी, बन्दर-बन्दरिया, कछुआ-कछुवी, मछला-मछली - चौरासी लाख योनियों में हम विषय भोगते हैं, इसीलिए ये विषम विषय हैं । विषम का अर्थ है कि बार-बार मरे, फिर जिये, फिर मरे, फिर जिये........। इसलिए इन्हें विषम विषय कहा गया है । जहर एक बार मारता है, विषम विषय ८४ लाख योनियों में मारता है । विविध ताप तापनि जू जरो – विषयों के विष को भोगने वालों को अनेक ताप (कष्ट) भोगने पड़ते हैं और सदा भोगते रहेंगे । इसलिए इनको छोड़ना सीखो । इन्हें छोड़ने के बारे में सोचो, छोड़ने का प्रयास करो, राधारानी कृपा करेंगी, ऐसा नहीं कि नहीं करेंगी । ये हमारी पुकार सुनती हैं । ये अवश्य ही कृपा करेंगी । विषम विषय विष ज्वाल माल में – ये विषम विषय हैं, इनकी ज्वालायें माला बनकर जलती हैं और जीव को विषय की आग में जलाती हैं कि और विषय भोगो, और भोगो, विवाह हो गया तो वर-वधू सदा भोग के बारे में सोचते रहते हैं । विविध ताप तापनि जू जरो – इसका परिणाम यह होता है कि अनेक प्रकार के तापों से जीव पीड़ित होता है । ताप केवल तीन ही नहीं हैं, अनेक प्रकार के ताप हैं । पैसा रखना भी ताप है । यह विषयों की ज्वाला है, इस ज्वाला में सुर-नर-मुनि (देवता, मुनि, मनुष्य) सब जल रहे हैं, विशेषकर देवता । इसी कारण अनादि काल से हम लोग तापों में जल रहे हैं । न जाने कितने ताप हैं, उनमें हम लोग अनादिकाल से जल रहे हैं । श्रीजी की दया पाने के लिए विषयों को

छोड़ दो । प्रयास करो, जितना छोड़ोगे उतना श्रीजी के पास पहुँचोगे, फिर सच्ची दीनता आएगी । **"दीनन हित अवतरी जगत में"** राधासुधानिधि में कहा गया है –

पूर्णानुरागरसमूर्ति तडिल्लताभं ज्योतिः परं भगवतो रतिमद्रहस्यम् ।
यत्प्रादुरस्ति कृपया वृषभानु गेहे स्यात्किङ्करी भवितुमेव ममाभिलाषः ॥ (श्रीराधासुधानिधि - ४०)

जो कृपा से ही वृषभानु भवन में प्रकट हुई हैं, जो रहस्यमयी परम ज्योतिर्मयी हैं, जो विद्युल्लता (बिजली की लता) के समान दीप्तिमती (प्रकाशमान) हैं, जो परम पुरुष भगवान् कृष्ण को भी अपने में रमण करा लेती हैं, जो पूर्ण अनुराग रस की मूर्ति हैं, मैं उनकी दासी बनूँ, यही मेरी अभिलाषा है । हम लोग अनादिकाल से विषम विषयों की ज्वाला में जल रहे हैं, विषयों के विष से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं, इसीलिए इस जगत् में राधारानी का अवतार हुआ, विषयों से छुडाने के लिए उनका अवतरण हुआ । उनकी सभी लीलायें रसमयी हैं, जैसे महारास लीला, श्रृंगार रस की लीला लेकिन यह प्राकृत श्रृंगार रस नहीं है, यह दिव्य श्रृंगार रस है । "दीनपालिनी हिय विचरो" यदि दीनता आ जायेगी तो राधारानी हृदय में आ जायेंगी । इसलिए "राधे किशोरी दया करो ।" राधारानी का दास बनना है तो विषयों की आशा छोड़ दो ।

"दास तुम्हारो आस और (विषय) की" विषय के लिए दूसरे की आशा करनी पड़ती है । स्त्री पुरुष को चाहती है तो उससे सुख पाने के लिए उसकी आशा करती है और पुरुष स्त्री को चाहता है तो उससे सुख पाने की आशा करता है । जैसे धन के लिए दूसरे की आशा करनी होती है । दूसरे की आशा करना चाहे भोग के लिए, चाहे पैसे के लिए, इसी प्रकार हम लोग साधु बनकर भण्डारे में स्वादिष्ट भोजन खाने और दक्षिणा पाने के लिए आशा करते हैं । विषयों की आशा छोडो, औरों की आशा छोडो । ये पत्नी है, ये पति है, ये माँ है, ये बाप है – सब संसार की आशा छोड़ दो । विषय का अर्थ केवल स्त्री-पुरुष की मैथुनी आसक्ति ही नहीं, केवल कामी-कामिनी ही नहीं बल्कि कंचन अर्थात् धन-सम्पत्ति और कीर्ति (यश, मान-प्रतिष्ठा) आदि भी विषय हैं । **"हरो विमुख गति को झगरो"** किसी जीव की आशा मत करो । चाहे स्त्री है, चाहे पति है, चाहे माँ-बाप हैं । आशा करोगे तो भगवान् से विमुख हो जाओगे । गृहस्थ हो तब भी संयम सीखो । जितना विषयों से दूर रहोगे, उतना ही राधारानी की कृपा मिलेगी । विषय श्रीजी से विमुख कर देता है । अपने आपको श्रीजी से विमुख मत करो, इसके लिए किसी की आशा मत करो । राधारानी के बारे में एक ही अद्वितीय ग्रन्थ है राधासुधानिधि, उसमें रस की स्थिति कही गयी है – **"अलं विषयवार्त्तया नरककोटिबीभत्स्या"** – विषय भोगना तो दूर विषय की चर्चा भी मत करो क्योंकि वह करोड़ों नरकों से भी घृणित है अथवा सीधे नरक जाने की तैयारी है । 'नरककोटिवीभत्स्या' – नरक फिर भी अच्छा है । विषय अथवा विषय की चर्चा करोड़ों नरकों से भी अधिक वीभत्स (घृणित) है । नरक क्या है ? जैसे बहुत अधिक कपड़े गंदे हो जाते हैं, उन पर मैल बहुत अधिक जम जाता है तो उन्हें धोबी के पास धुलने के लिए भेजा जाता है, जिसे अंग्रेजी में लाउंड्री भी कहते हैं । वहाँ अच्छी प्रकार धोये जाने पर कपड़े स्वच्छ हो जाते हैं । भगवान् ने कृपा करके नरक को बनाया है, नरक में जाने पर तो मनुष्य शुद्ध हो जाता है । **'वृथा श्रुतिकथाश्रमो बत बिभेमि कैवल्यतः ।'** राधासुधानिधिकार कहते हैं कि श्रुतियों को भी छोड़ दो क्योंकि उसके ज्ञान काण्ड के अन्तर्गत जो ब्रह्म की चर्चा की गयी है, उससे कैवल्य मोक्ष की प्राप्ति होती है । उससे हमको भय लगता है क्योंकि कैवल्य का अर्थ है ब्रह्म में लीन हो जाना और हम उस परम ब्रह्म में लीन होना नहीं चाहते । हम तो ब्रह्म से अलग रहकर उसके दिव्य रस का पान करेंगे । इसलिए श्रुति चर्चा और उसका लक्ष्य मुक्ति को भी छोड़ दो । **'परेशभजनोन्मदा यदि शुकादयः किं ततः'** इस पंक्ति में शुकदेव आदि परमहंसों को भी ले लिया गया है । ग्रन्थकार कहते हैं कि यदि अनन्त ऐश्वर्यशाली भगवान् के भजन में शुकदेव आदि परमहंस मुनि उन्मद हैं तो हमें उनसे भी कुछ लेना-देना नहीं है । **'परं तु मम राधिकापदरसे मनो मज्जतु ॥'**

हमारा मन तो केवल श्रीराधिकारानी के चरणकमलों के रस में डूब रहा है । राधारानी के चरणों के रस में डूब जाओ, विषय से छूट जाओगे । ये जो पद हम गा रहे हैं, इसी के भावों को महापुरुषों ने गाया है, गोस्वामी विट्ठलनाथजी ने कहा है – **"यद् दैन्यं त्वत्कृपाहेतुः"** – उनकी कृपा पाने का रास्ता है – **'दैन्य'** **"न तदस्ति ममाण्वपि"** – हे राधे ! मुझमें अणुमात्र भी दैन्य नहीं है । राधारानी ने पूछा – फिर क्या चाहते हो ? आचार्यचरण ने कहा – आप ऐसी कृपा कर दो । **"तां कृपां कुरु राधेश यया तद्दैन्यमाप्नुयाम्"** – किसी तरह मुझको दीनता मिल जाये । दीनता मिलेगी तो कृपा भी मिल जायेगी । दीनता कोई नहीं दे सकता है । जब तक शरीर के प्रति हमारे मन में अहं है, देह भाव है, तब तक सच्ची दीनता नहीं आएगी । **'तां कृपां कुरु राधेश'** – हे राधारानी ! ऐसी कृपा कर दो – 'यया तद्दैन्यमाप्नुयाम्' – वह दीनता मुझको प्राप्त हो जाए । **"कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा"** सब लोग हाथ उठाकर राधारानी से करुणा माँगो..... सब लोग हाथ उठाओ .....किसी में दीनता नहीं है । मैं किसी का अपमान नहीं कर रहा हूँ । दीनता आ जाए तो श्रीजी आ जायेंगी । हमको भी श्रीजी नहीं मिलीं । हम केवल गा रहे हैं किन्तु आशा लगाये बैठे हैं । हम आशा लगाये हुए हैं और आशा लगाना सिखाते हैं । **'कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा'** हम गा रहे हैं किन्तु अणुमात्र भी दीनता नहीं है हमारे में, हम यह निश्चित चिल्लाकर कहते हैं । अगर कोई समझे कि इनमें (बाबा में) दीनता होगी तो नहीं है, नहीं है । न थी, न है, केवल आशा है । इसी आशा से बरसाना आये हैं । सबको श्रीजी के प्रति इसी आशा से बरसाना आना चाहिए । यद्यपि आत्मप्रशंसा नहीं करनी चाहिए, हम कर रहे हैं कि यह राधारानी की दया है कि हमने आज तक पैसा नहीं रखा । **"यही आस ते द्वार पर्‌यो"** **"यही आस बरसाने (गह्वर में) पर्‌यो"** बरसाने में पड़ो हूँ, गह्वरवन में आ गया हूँ, तेरे द्वार में पड़ गया हूँ ।क्या पता ? इसका क्या प्रमाण है कि यह राधारानी का द्वार है ? शास्त्र में लिखा है –

यत्प्रादुरस्ति कृपया वृषभानु गेहे स्यात्किङ्करी भवितुमेव ममाभिलाषः । (श्रीराधासुधानिधि – ४०)

जो कृपा से ही वृषभानुभवन में प्रकट हुई हैं, मैं उनकी दासी बनूँ, यही इच्छा है । यही आस तेरे द्वार पड़ो, दया करो, हे राधे आपके द्वार बरसाने (श्रीगह्वरवन) में पड़ गया हूँ । जो लोग गह्वरवन में नहीं रह पाते हैं, वे गह्वरवन, वृन्दावन, बरसाना की आशा करें, विश्वास करो और इसी विश्वास से हम लोग यहाँ पड़े हैं कि वे दया करने वाली राधेरानी अवश्य ही कृपा-करुणा करेंगी ।

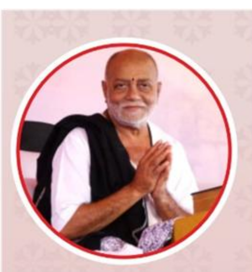

श्रीधाम बरसाना में 'श्रीराम कथा महामहोत्सव' - गोसेवा एवं आध्यात्मिक साधना का दिव्य संगम

भारतवर्ष में जब धर्म, भक्ति और संस्कृति का त्रिवेणी संगम होता है, तब जनमानस की चेतना एक नए आलोक से प्रकाशित होती है। ऐसा ही एक पुण्यपर्व आने वाले सितम्बर माह में श्रीधाम बरसाना की पवित्र भूमि पर साकार हो रहा है । सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र एवं नित्य युगलदम्पति श्रीराधाकृष्ण के शाश्वत् धाम बरसाना में एक अत्यन्त विशिष्ट और पावन आयोजन की तैयारी हो रही है— ब्रजभूमि के गोवंश सेवार्थ 'श्रीराम कथा महामहोत्सव', जो हमारी सनातन परंपरा की दिव्यता, गौरव और करुणा का समन्वित उद्घोष है ।

यह आयोजन, हमारे आराध्य श्रीराधामानबिहारीजी की कृपा तथा पूज्य पद्मश्री श्रीरमेश बाबाजी महाराज की अनुप्रेरणा से संचालित श्रीमाताजी गोशाला के गौरवशाली १८ वर्षों के पूर्ण होने पर आयोजित हो रहा है । इस गोशाला में वर्तमान में ६५,००० से अधिक निराश्रित एवं रोगग्रस्त गोवंश की सेवा, मातृवत्, श्रद्धा और स्नेह के भाव से की जा रही है, जो स्वयं में एक जीवन्त आध्यात्मिक साधना है । श्रीमाताजी गोशाला के यह १८ वर्ष हमारे समर्पित संतों की तपश्चर्या व उनकी निर्बाधित एवं अखंड रूप से जारी सेवा का अनुपम उदाहरण है । ६५,००० से अधिक गोमाताओं की संरक्षण-गाथा इस गोशाला को भारत की सांस्कृतिक आत्मा का जीता-जागता प्रतीक बनाती है ।

यह आध्यात्मिक व गोसेवा समर्पित उत्सव आगामी दिनांक २० सितंबर २०२५ से प्रारम्भ होकर २८ सितंबर २०२५ पर्यंत आयोजित किया जा रहा है । इसमें विश्वविख्यात रामकथा के अत्यंत सरस वक्ता परम श्रद्धेय श्री मोरारी बापू जी अपनी दिव्य वाणी से रामकथा की अमृतवर्षा करेंगे, जिनकी वाणी में भाव का सागर, चिंतन की गहराई और भक्ति की सुगंध समाहित होती है । पूज्य बापूजी का कथावाचन न केवल श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करता है, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षण को भगवत्त्व में रूपांतरित करने की प्रेरणा देता है । इस कथा में श्रोताओं का श्रीरामचरित के माध्यम से आत्मा का परिष्कार और गोसेवा के माध्यम से करुणा का संवर्धन होगा व साथ ही इस कथा में निहित भाव, अध्यात्म और रामत्व का अनुभव हमारे जीवन को सार्थकता एवं नई दिशा प्रदान करेगा ।

इस महामहोत्सव में विभिन्न संत, विद्वान और श्रद्धालु देश-विदेश से पधारेंगे, जिनकी उपस्थिति इस आयोजन की गरिमा को अभूतपूर्व बनाएगी । यह अवसर न केवल आत्मिक उन्नयन का है, बल्कि सनातन धर्म की परंपराओं को पुनः हृदय में स्थापित करने का सशक्त माध्यम भी है ।

इस कथा के मनोरथी- मुंबई के वरिष्ठ समाज सेवी एवं गोभक्त श्री हरेश.एन.संघवी, पूरे मनोभाव से इस महामहोत्सव को विशिष्टम उत्सव के रूप में प्रस्तुत करने के लिए श्रीमानमंदिर के संतों के साथ अनवरत कार्यरत हैं ।

कथा कार्यक्रम का विवरण :-

२० सितंबर कथा शुभारंभ, समय - सायं ३:३० बजे से ७:०० बजे तक

२१ से २८ सितंबर: प्रतिदिन प्रातः ९:०० बजे से दोपहर १:०० बजे तक

स्थान: श्री माताजी गोशाला प्रांगण, बरसाना, जनपद मथुरा (उत्तर प्रदेश)

हजारों गोमाताएँ आप सभी भक्तों के आगमन की प्रतीक्षा में हैं । आइए, इस दिव्य आयोजन में सहभागी बनें और सच्ची गोसेवा एवं रामभक्ति का साक्षात् अनुभव प्राप्त करें ।

राधे राधे। प्रिय वैष्णवजन,

मैं हरेश संघवी अपने जीवन के अनुभवों के बारे में कुछ भाव व्यक्त करना चाहता हूँ । मेरा जन्म एक वैष्णव परिवार में हुआ, जहाँ हमारे घर में पहले दिन से ही ठाकुरजी की सेवा होती रही है । माता-पिता से मिले संस्कारों और माहौल ने मुझे हमेशा प्रभु के सन्मुख रहने की प्रेरणा दी । बचपन से ही धार्मिक संस्कार मिलने के कारण धर्म के प्रति मेरी रुचि बढ़ी । प्रभु की कृपा से मैंने पुष्टिमार्गीय कथा और पूज्य मोरारी बापू की कथा का आयोजन करवाया । पिछले २९ वर्षों से महुआ में अखंड रामधुन कीर्तन, जो श्रीप्रेमभिक्षु महाराजजी द्वारा स्थापित है, उसमें निरंतर सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है । तभी से गोवंश और समाज के उपेक्षित वर्ग की सेवा का भाव भगवत्कृपा व संतों की अनुकम्पा से हृदय में बना रहा । इसी भाव के कारण सन् २००१ से महुआ (गुजरात) में 'गो रक्षा संघ' के तत्वधान से संचालित गोशाला जहाँ २५० से अधिक गोमताओं को संरक्षण प्राप्त है, की सेवा करने का पुनीत सौभाग्य मिल रहा है व मुंबई स्थित श्रीद्वारकाधीश गोशाला की सेवा भी विगत् २५ वर्षों से अनवरत जारी है । महुआ (गुजरात) में ही हमने पिछले १० वर्षों से तीन स्थानों पर जरूरतमंदों के लिए भोजन की व्यवस्था की है । "भुख्याने भोजन" नामक संस्था के तहत, हम सड़क पर बैठे सेकडो परिवारों को प्रतिदिन दोपहर का भोजन देते हैं। "अल्लाह राम सेवा संस्था ट्रस्ट" के जरिए, जो लोग घर पर खाना नहीं पका सकते, ऐसे कई सौ लोगों तक भोजन पहुँचाते हैं । वहीं महुआ स्थित श्रीलक्ष्मी नारायण मंदिर में साधु-संतों के लिए भी भोजन की व्यवस्था है, जहाँ प्रतिदिन १०० से अधिक साधु महाप्रसाद प्राप्त करते हैं । हमने अस्पतालों में भी सेवा की है और महुआ में ३१ गरीब

परिवारों को घर बनाकर दिए हैं । वर्ष २०२३ में हमने सोमयज्ञ का आयोजन किया, जो वेदों में अत्यंत पवित्र माना जाता है। यह यज्ञ नौ दिनों तक चला, जिसमें हजारों भक्तों ने भाग लिया और हर दिन सुबह-शाम सभी भक्तों ने महाप्रसाद का आनन्द लिया । इसी दौरान पुष्टिमार्गीय आचार्य श्री यदुनाथ जी महाराज द्वारा गोपी गीत और भ्रमर गीत जैसी महत्वपूर्ण कथाएँ सुनाई गईं । श्री यदुनाथ महाराज जी द्वारा ही पुष्टि सम्प्रदाय के ४१ पदों पर आधारित भागवत-कथा का भी आयोजन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ और गोस्वामी बालक श्रीबृजराज कुमारजी के श्री मुख से श्रीनाथ चरित्र कथा का भी आयोजन हुआ । पुष्टिमार्ग के ही आचार्य पूज्य श्री द्वारकेश लालजी महाराज की सरस वाणी से श्रीमद्भागवत कथा और बल्लभ साखी कथा का आयोजन मुंबई में करवाने का पुनीत अवसर प्राप्त हुआ । इसके अलावा कई अन्य आचार्यों की कथाएँ भी इसी सेवा क्रम में आयोजित की गईं । यह सब श्रीकृष्ण कृपा से ही संभव हुआ । हम कई वर्षों से बिल्डिंग इंडस्ट्री में हैं और जरूरतमंदों को आर्थिक, मेडिकल, और शैक्षणिक सहायता प्रदान करते हैं । हमारा उद्देश्य कृष्णकृपा से संचालित व्यवसाय द्वारा हरि-गुरु-वैष्णव की हर संभव सेवा करना रहा है। इसी भावना से वर्ष २०१३ में बरसाना के श्रीमानमंदिर और यमुना-आंदोलन से जुड़ाव हुआ । उस वर्ष मथुरा से दिल्ली तक की यात्रा के दौरान सभी भक्तों हेतु महाप्रसाद की व्यवस्था की गई । पुन: २०१५ में भी यमुना आंदोलन के दौरान १६ दिनों तक हजारों भक्तों के लिए महाप्रसाद की व्यवस्था करने का परम सौभाग्य ईश्वर-कृपा से प्राप्त हुआ । इसी समय वर्ष २०१३ में अभी तक की गई साधु-संतों-वैष्णवजनों एवं गोसेवा के पुण्यफलस्वरूप ब्रज की महान विभूति परमविरक्त संत पूज्यश्री रमेश बाबा महाराजजी के प्रथम बार दर्शन हुए एवं उनकी प्रेरणा से संचालित श्री माताजी गोशाला देखने का भी अवसर मिला, जहाँ उस समय २०-२५ हज़ार गोवंश की मातृवत् सेवा हो रही थी । श्रीराधारानी की कृपा से यह गोशाला निरंतर चल रही है। इस गोशाला में हो रही निष्काम सेवा से मैं बहुत अभिभूत हुआ और तब से मैं इस सेवा में जुड गया । बढती हुए निराश्रित गोवंश की संख्या व उनकी सेवा हेतु आवश्यक संसाधन में कमी के कारण गोवंश को हो रही पीड़ा को देखते हुए मेरे मन में वर्ष २०२५ के भीतर ही श्रीमाताजी गोशाला में निवास कर रहे ६५००० से अधिक गोवंश के सेवार्थ पूज्य मोरारी बापू जी के श्रीमुख से श्रीरामकथा आयोजित करने का विचार आया ताकि इस कथा के द्वारा समूचे विश्व में भारतीय गोवंश की सेवा का सन्देश प्रमुखता से दिया जा सके । मैंने पूज्य बापू जी से निवेदन किया, जिसे उन्होंने सहज स्वीकारा और इस वर्ष श्रीधाम बरसाना में गोसेवा के निमित्त आगामी दिनांक २० से २८ सितंबर २०२५ तक 'श्रीरामकथा' करने का आशीर्वाद दिया । आगामी सितम्बर माह में आयोजित हो रही 'श्रीराम कथा महामहोत्सव' के माध्यम से हम श्रीमाताजी गोशाला द्वारा ब्रजभूमि से संचालित इस गो-क्रान्ति और गायों की महिमा का प्रचार पूरे भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में करने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि गोवंश की सेवा करना हर सनातन धर्मावलम्बी के लिए सेवा का अवसर ही नहीं बल्कि जीवनशैली बन जाए। परम पूज्य श्री रमेश बाबाजी महाराज इस पृथ्वी पर वर्तमानकाल की सबसे विशिष्टतम एवं अलौकिक विभूति हैं, जिनके अपार सामर्थ्य से आज आध्यात्म व विशुद्ध कृष्णप्रेम का प्रवाह करोड़ों वैष्णवों की आत्मा को प्रकाशित कर रहा है व साथ ही ६५ हज़ार गायों का मातृवत् पोषण हो रहा है एवं प्रतिदिन ३०० से अधिक गोवंश का उपचार भी गोशाला स्थित अत्याधुनिक गोचिकित्सालय में होता है । यह 'श्रीराम कथा महामहोत्सव', वैष्णव उत्सव के रूप में आयोजित किया जा रहा है ताकि भक्त लोग, वैष्णवजन गोशालाओं और गायों की महत्ता को समझें और उनकी सेवा करें । मैं सभी से आग्रह करता हूँ कि इस कथा में सम्मिलित होकर इसका लाभ उठाएँ और गायों की रक्षा तथा गोशालाओं के संचालन में यथा सम्भव योगदान दें । यह कार्य राधारानी की कृपा से सफल हो, यही प्रार्थना है । जय श्री राधे । राधे राधे ।

हरेश.एन.संघवी,
वीणा डेवेलोपर्स (मुंबई)

श्री माताजी गौशाला सेवार्थ

श्री रामकथा

महामहोत्सव

श्रीधाम बरसाना

शनिवार 20/09/2025 से रविवार 28/09/2025

संध्या कार्यक्रम की सूची

VEENA DEVELOPERS
Your Dreams... Are Our Homes...
ANDHERI - MUMBAI

प्रथम दिवस

शनिवार, 20 सितंबर 2025
श्री राम कथा शाम 4.00 से शाम 7.00 बजे तक,
महाप्रसाद 7.00 बजे से

द्वितीय दिवस

रविवार, 21 सितंबर 2025
महारास कथा स्थल पर परम पूज्य श्री रमेशबाबा महाराज जी के सानिध्य में
शाम 5.30 से 7.00 बजे तक - महाप्रसाद 7.30 बजे से

तृतीय दिवस

सोमवार, 22 सितंबर 2025
श्रीजी मंदिर (श्रीराधा मंदिर-भानगढ़) में छप्पन भोग,
दर्शन समय शाम 5.30 से, महाप्रसाद 7.30 बजे से

चतुर्थ दिवस

मंगलवार, 23 सितंबर 2025
ब्रज की प्रसिद्ध रासलीला एवं फूलों की होली
शाम 5.00 बजे से 7.00 बजे तक, महाप्रसाद 7.30 बजे से

पंचम दिवस

बुधवार, 24 सितंबर 2025
श्री गिरिराजजी छप्पन भोग, सुरभि कुंड, जतीपुरा
दर्शन शाम 5.30 बजे से, महाप्रसाद 7.30 बजे से

षष्ठ दिवस

गुरुवार, 25 सितंबर 2025
भजन संध्या, श्री हेमंत बृजवासी एवं सुश्री मैथिली ठाकुर के संग
शाम 5.00 बजे से 7.00 बजे तक, महाप्रसाद 7.30 बजे से

सप्तम दिवस

शुक्रवार, 26 सितंबर 2025
श्री यमुनाजी छप्पन भोग , विश्राम घाट - मथुरा
शाम 5.30 बजे से, महाप्रसाद 7.30 बजे से

अष्टम दिवस

शनिवार, 27 सितंबर 2025
कुसुम सरोवर (गोवर्धन) दीपदान दर्शन, हवेली संगीत अमी नीरज परीख,
मातंग परीख, सृष्टि त्रिपाठी ग्रुप के संग (अहमदाबाद वाले)
शाम 5.30 बजे से, महाप्रसाद 7.30 बजे से

नवम दिवस

रविवार, 28 सितंबर 2025
श्री राम कथा विराम

श्री माताजी गौशाला सेवार्थ

श्रीरामकथा

महामहोत्सव

श्रीधाम बरसाना

परम पूज्य मोरारी बापू

की अमृतमय वाणी द्वारा श्री राम कथा का रसपान करायेंगे ।

शनिवार 20/09/2025 से रविवार 28/09/2025

कथा का समय

शनिवार, दिनांक : 20/09/2025
शाम 4.00 से शाम 7.00 बजे तक

रविवार, दिनांक : 21/09/2025 से रविवार, दिनांक : 28/09/2025
प्रातः 10.00 से दोपहर 1.30 बजे तक

कथा स्थल

श्री माताजी गौशाला - श्रीधाम बरसाना
श्री मानमंदिर सेवा संस्था, बरसाना (मथुरा)

राधे राधे

मनोरथी :

श्री हरेश एन संघवी
श्रीमती वीना एच. संघवी
वीना डेवेलपर्स (अंधेरी-मुंबई)

Live on AASTHA Channel | shreematajigaushala@gmail.com | @gausevasangramkatha | @gausevasangramkatha | @gausevasangramkatha

RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2024-2026 श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा 'गुप्ता प्रिन्टिंग प्रेस, खरौट गेट, कोसीकलाँ, मथुरा. उत्तरप्रदेश' से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संस्थान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित,AGRA/WPP-12/2024-2026 AT 31.12.26